





تعداد حساب اکثر بری ہیل

[illegible]

ॐ३ / वे . नृ . वि = उ० = .

विभुं रगमं उमुगमगभा॥५५॥ सैध

धूमत्रावगम चं ठवडिभक्तये, स

विभृपगमभुक्ति देउडुड मगनी॥५॥

मंभागववृद्धे उमुसैवभवैसुगी सुगी॥

७१२॥ गणैवाम॥५॥ ठगवकुदि भामे

वी भद भयेडि यारवाना॥५॥ रि

वृवीडिक सभद्धन भकममृष्टम किं

दि ए, यदूरुकायभामे वी यमुडुय

यमुमुवा॥ १०॥ उमुवंमुउमिमुमि

दुडु वेरु विरं वर॥ १०॥ = रि

॥ टपिमुवा॥

७११

निहैवम ^{दि} रणमुद्रिदयभवभिमं
 उडभा ॥ ५३ ॥ उक् पिउडमदुद्रि
 दणमुयांभम, स्वनंकदमि
 मुकुम विरुवडिभायम ॥ ५४ ॥ दि=
 उदनेडिउरुले केमनिहापृठिणी
 यो, यैगनिमंयम विरु रणगट्टक
 लवीरुडो ॥ ५५ ॥ मुमुदीदमेधमरु
 रणकदने रणगंरुडुः, उरुमुवम
 गेयेगे विपृडिभपूकैरुडो ॥ ५६ ॥

३७ / सि. म. सु. = ३० = ॥

विष्णुकलमलेकुं, दंतवृद्धभृष्टे,
भक्तिकमले विष्णुः भृष्टवृद्धपूरुषः ॥ ५२ ॥
मधुगणवभोगेयै, पूषपुंय रणारुजभा ॥

उपुवयोगनिमृंभकगृहभृष्टः ॥ ५३ ॥
विषेणकुयदगेद ॥ नैरुक्तलयभा ॥

विमेषुगीरुगामृष्टी भृष्टि मंदारक ॥

लीमा ॥ ५७ ॥ निमृंरुगवंती विष्णु उलं

उरुमः पूरुः ॥ १० ॥ वृद्धे वम ॥ १० ॥

दं भु दंभुणं दं विवयकृणभुग ॥ ७१ ॥
मिक ॥

भण्डमकोनिटं, इणभइधिक भि॥

ਸਰੁਮਾਤੁ ਤਿਤਾ ਨਿਟਾਯਾਤੁ ਸੁਦ ਵਿਸੇਖਤੁ (੨੩)

द्वामेवमनु भविषीद्वेद एतरीयः,

(१२)
उयैऽमूदो विमुंइयैऽभुण्णे रगो

इयैऽदल्लुऽरु विदुमदुनुय भवम्॥

विमर्षे म विदुः पदं विदितुः च

पालने॥ २५॥ इवामं दृडिउ पत्रेण

महेश्वरगणेशाय नमः । महा विष्णुमहाभ

यमदमेकमदमुद्रिः॥२॥मद

भेदाय रुगवरी भद्र रे वी भ दे सुगी

५५ डिपुंदि भवमुगु इयविठविती

(८०) / ५ - ४ - ३ - -

मैपि निश्वसंतीः कसुं उभिदं माः॥
विष्णुः मगी गूढ म भदभीमावपम॥
(८३३)

कगिडमुयड्डुं कसुं उं सक्तिम बुवेडा॥
मद्व भिउं पूरुवै सुठ, म्गै रूविमं वड्डे॥
(८३८)

भेद यैडै मा ण्ड वसुं भपु कै ट ठे॥
पूर्वै पंम र्गगड्डी नीयड भसुं लभु॥
(८३५)

वैण्णसुकि यडभपुड्डुं उमडै भदभुं॥
(३५)

रिं ट पिनुवम॥ ३७॥ एवं सुडा उरु रूवी

उमभी उड्वेणम॥ ३३॥ विष्णुः पूरण

नड्डुय नि द उं भपु कै ट ठे॥ रि =

नेशभृगभिकव दृ दृ म ये हृ भुवे
 गमः॥३७॥ तिनभृम जनेडभुं वृद्ध
 ॐ, वृकुलामनः॥ उडभुं यल्लग्नव
 भुय भुक्तिं लानातनः॥७०॥ एक
 लवे दिमयनउडभृम म मे यडे,
 भपकैर ठे मुगझनावडिवीदपा
 रुमि॥ ७०॥ क्लृण्णकृ क्लृ दतं
 वृद्धं लं ए त्रिडेहृमि॥ भभक्त यः
 इभुहं यय पे रगव दृ गि॥ ७१॥

(८०)

हि-ये-कु-हि-

पद्मवदमदभुमि वादु पूका मे
विदुः॥ डाव पुडि वल्ले मने, मदम
य विमे छिडे ॥ ७३॥ मीछगवानुका ७४
७५ उकावने वो मने विपदा मिडि के मवम॥
७६॥ ठवेडम, हमे मयू मभवष्ट
वठवपि॥ ७७॥ किमटेनको ७८
ड्डाव विवडं मय॥ ७९॥ टपिकुकाय॥
८०॥ वड्डिड्डा मिडि उरु मवम ये म
ये रणगडा॥ ८१॥ विल्ले छडा छं ग
मिडे छावकु मल्ले कपः॥ हि=॥

८३/ मे - कु - रि - - - ॥

मुवं एदि नय ईवी मलिलेन परि

धुता ॥ ०००॥ ट विक्रवस ॥ ०००॥ उ वेद

कू ठगवः मङ्ग यरुगम कृता ॥

कृ त्वा यरुग विभिन्ने ए यने मि

भीतयेः ॥ ००१॥ एवमेव मभुद्वन

वृद्ध ७ मंभुद्वभयमा ॥ पूठावमभु

मेवृ भुक्तु यः मृता वरुभिः ॥ ००३॥

उडि मीभाकु कु यथा ल सा वलिके

भरुता मे वी भद्रु भप के ट रु वणः ॥

पूठमः मरिडमु ॥

मुठमा भमा ॥

८९ / सं. सु. १. चरित्र. १८

रिडिडिय चरित्रमु विष्णु टपिः मज्जल
क्री र्वर ३ छिक्कः मकभुगी मक्ति
ननावीरभा कयमुदभा यएवेर
भुडिनयी मीननाथीउवेडिडिय चरित्र
प ० विडियेगः॥ अथ ए नभा रिमु
रिमुकभुमुग मुग र्वे क लिमं यम्
ण थु डि कं/ रुं मक्तिमभिच
यभए लरं य हुं मुग रु एनभा॥
मुलं पमभरु मने यरु प डी द मु
वै क ल थुं। मेवै मै रिम भिनी
मिद मज ल क्री मरे ए भिदभा॥

23

4. 2. 8. 10. 12 -

सिद्धमस्तुभिः कथयते ॥ उपि न व म ॥ ० ॥

हिं व भगमकु द्युं प्रलभतुमं
 पुग भदि ये भग उमठि पे व न
 य पावुगे ॥ १ ॥ उइ भग म द वी द

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ शिष्टाय नमः ॥
 लक्ष्मणाय नमः ॥ ३ ॥

उड्ये गणिङ्ग मवः यम् ये विंभू
य डिमा॥ भुगभूटगड भुड यइ मगर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ यथावदुत्तयैषु नृभिरि
य भगवत्पुत्रम् ॥ इत्युक्तं यथाभावात् ॥
छिन्नविविभुम् ॥ ९ ॥

अदेकगृहि लेमुनं ^{वि} अनसुवत ^म मु॥
 अटपं य ^{८२} पिकागमुयमेव ^{८३} पिडिथुडि॥
 भुता त्रिगुडाभवेते मेवग ७ कवि,
 विमगत्रियक भट्टमदिषे ^{८४} मरुद्रु॥
 एउवक विडं भवम, भग विविमधिरुभा॥
 मां वः पूपत्रभे ^{८५} वणमुमुविमि वृडभा॥
 अं नममु मेवानं वमं मिम पमुनः॥
 यककिंय मभुमु हकली कटिलाने ^{८६} ॥
 उडि केय पलमु यकिने वरुन उडः॥
 तिमुरा मभउरे बुद्ध ^{८७} मः मङ्कगुम॥

६६

२०५ १०० १००

अष्टमे यैव न वने मरु सीने मगीतः॥

नितं भुमदते ए भुमैतं भमगमुत॥^{१००}

अतीवते एभः कुतं दुलत भुवपवतम॥

रुमसुभुमगभुत दुलत वृपुमिगतम॥^{१०१}

अतलं उरुते एभुवमेव मगी एभ॥

एकभुं उरु कुङ्गी वृपुलेक इयं द्विध॥^{१०२}

यम रुमु भुवते एभुन एयततु यम॥

यम रुमु भुवते एभुन एयततु यम॥^{१०३}

मेभुन भुन येदुमं भपृमैनु एभुवत॥

वकुलेन एभुन नितभुमु एभुवतः॥^{१०४}

[illegible]

भमभुमभु येषु निरुग्मी निव काः ॥
 कालमुत्तुवात्तुम् ३३ यम्भुनिमलभा ॥
 कीर्ति सुभले दग्भुग्मी य ३ यम्भु ॥
 उरु भलिं उरु निवृत्तु ३३ ले कटा कनि ॥
 यत्तुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ॥
 ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ॥
 यम्भु ली यका ३३ यम्भु ली यम्भु ३३ यम्भु ॥
 विमुक्तम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ॥
 यम्भु ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ३३ यम्भुम् ॥

कर्मभेदादुक्तमेव दधी मृगान्तपि कु
 ण। भगवन्मन्त्रवृत्तम् मन्त्रिलक्ष्यम्
 उक्तम् ॥ ५० ॥ लोकादुत्पत्तकगयनने
 उक्तिनपमृमि, उक्तापि मन्त्रवृत्तमे
 दगते विपदिताः ॥ ५१ ॥ भद्रभावा
 पूरुवेन संभाषितिक ॥ ५२ ॥ उक्ता
 विभयकदेवैगविम् एगदो ॥ ५३ ॥
 भद्रभावाद्गमैषा उक्ता संभेदो
 एगदो ॥ ५४ ॥ विनमपि उक्तामिद्वी
 उगवरीदिम ॥ ५५ ॥ वलाम्बुपुम्भे
 यमदभावापुयमुक्ति ॥ उक्ता विभुएते

[illegible]

क० भेका मु० मे ददी सु० न० न० पि०
 ७। भ० न० भ० न० वृ० पु० स० ठि० ल० प० भु०
 र० दू० ३। ५०॥ लि० ठ० दू० दू० प० क० ग० य० न०
 उ० किं० न० प० मृ० सि० उ० व० पि० भ० भ० उ० व० त्रु० भे०
 द० ग० त्रु० वि० प० डि० उ० ॥ १३॥ भ० द० भ० य०
 पू० ठ० वे० न० सं० भ० ग० भि० डि० क० ३। ७। उ० व० उ०
 वि० भ० य० क० दू० ये० ग० वि० मृ० र० ग० दू० ॥ ६३॥
 भ० उ० भ० य० द० ग० मृ० य० उ० य० सं० भे० दू०
 र० ग० उ०। लू० वि० न० भ० पि० ये० तं० मि० र० वी०
 उ० ग० व० ती० छि० भ० ॥ ६८॥ व० ल० म० दू० पु० भे० द०
 य० भ० द० भ० य० पु० य० मु० डि० ॥ उ० य० वि० भु० र०

भमभुमैकुपेपुनि^६ एगमी त्रिव काः॥
 कालसुतुवा^{१३५} त्रुं उमै यमय त्रिमलभा॥
 कीरि सुभले दगम, एगे य उ वाभुगे ॥
 उरु भलि उवा रि वुं रु रु ले कटा क निम ॥^{१३५}
 अरु मं उवाभुं क युग भव व रु यु ॥^{१३५}
 उ युगे विमले उरु रु वे य क भ न उ भभा ॥
 मरु ली य क ग रु नि, भमभुभु ली यु रु ॥^{१३५}
 विमक मरु रौ उमै, पाभुं य डि त्रिमलभा ॥
 मभुं रु, ने क रु प नि उवा रु रुं य रुं भभा ॥

३२ / च. सु. वि. — — —

कर्मभेदादुक्तं मे दधी सुभानवपिकु
ण। भगवन्भगवत्पु म, ठिल पामु
उक्तुडि। ५०॥ लिठड्डुपकग्यनने
उकिंनपमृमि। उक्तापिभमगवत्ते मे
दगत्ते निपडिडाः॥ ५१॥ भदभाय
पूठवेन संभाभिडिक नि॥ उक्ता
विभयकदे येग निम् एगदे॥ ५२॥
भगवन्भगवद्गुप्तय संभेदो
एगडा। लुनिकभपि चंमिमेवी
उगवतीदिम॥ ५३॥ वलाम्भुपुमेद
यभदभायपुयमुडि॥ उक्ताविभुएग

ममभुम्भुयेपुनि^६ एगमी निव कः॥
 कालसुम उवा^{६९६} नुं उमु यमय निमलमा॥
 कीरि सुभले दग्ग, एय उवाभुगे॥
 उरु मणिं उवा निवुं उरु ले कटा कनि॥^{६९५}
 अरु मं उवा मुं कयुग मवव द्यु॥^{६९७}
 उयगे विमले उरु मुं वेय कभर उममा॥
 मरु ली यकग नि, ममभुभुली युम॥^{६९८}
 विमुकम र्मुं उमु, यामुं उ निमलमा॥
 मरु उ, ने कडुप नि उवा रुं उं यं ममा॥

ॐ नमः ॥ हि मयवृत्तं ॥ हि

यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा
श्री माः ॥ मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा

मीमांसा यद्वा यद्वा ॥ = हि ३५ मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा यद्वा मद्वा मद्वा ॥ वृत्तमिष्टं
मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा ॥ **मद्वा मद्वा**
मद्वा मद्वा

हि मद्वा मद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा यद्वा
मद्वा ॥ यद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा ॥ मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा
मद्वा मद्वा ॥ विमलवर्ण मद्वा मद्वा मद्वा मद्वा

ॐ३/ सं. ३०. ति =

तिरीरइययविस्मृते उद्गुणनयणी भक्तिः त्रः

मक्ति पूर्य रयाड। ३॥

मीभकृते यउयाम्भं तिस्मि कयै नमः॥

तिपूषभाष्टे नगकुचरुते न, पूभण्ट याडावडा॥

ति ययमेन द्रुडिगु गय नि॥

तिभाव लिः भद्रातये येभनः कष्टुड धूमः॥

त्रिमभयडमुदुडिं विभुग वृरुडे भम॥ ०॥

भद्रभाय उरुवेनयसामत्रुग णिपः॥ भव

कुवभफठागभावलिभुगयेगवेः॥ १॥

भुगे शिपेउगे प्रवं येइवंमभभुम्वः॥ भुग

येनभाएकुडभमु क्रिडिभकु ले॥ ३॥

३ मृपालयडभभृकृए कु इतिवोभान॥

ॐ / ॐ - ॐ = - ॐ =

विब्रुवः मइवमुसृकैल विपुं भिन
मुम॥ ८॥ उभृगैरुवमुमभित्थुवल
भिनः॥ उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
ठिल्लिः॥ १॥ उः मुभृगयउयुमि
ममथिउवउ॥ उभृगैरुमउयुमै
मुभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
मुभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि
उभृगैरुमउयुमैकैल विपुं भि

३८

वे. कु. वि = उ० =

सि सगवडिं पूवंडो ह ऊ ववृट्मदी ऊरणा॥
ममभृगुयमुलै मुः ऊव मि भूडं वृयभा॥
मनिमुः मे डि रुः यिनक्तयं के मोगमि
हृडि॥ एडमुट्मभडं मिनुयममथक्ति
मः॥ ०५॥ उडविपूम्भहृ मवै मृभकंरु
रु ममः॥ मय भुमुनकभूंरु दे उमुगम
नैरकः॥ ममेक उवकभूटं मुभन उव
लक्तमे॥ उट कल्लवयमुमुट्पडः पूम
येमिडभा॥ ०२॥ भूदव वयभडं वै मृः ।
भूमवावनो य यभा॥ ०३॥ वै मृ उवयः
(०१)

मम पित्र भवै मुद भवै न नि नं कल ॥ (५)
 यद्वैरुगै विगुमु जलैरु रुसागुठिः॥
 विदी नमु जलैरु पद्वैरु रु विमैजभा ॥ (५०)
 वनभरुगैरुः यी विगुमु पुववुठिः॥
 मे दं न वि मि पुदं रु मल रु मल
 द्विकभा ॥ ५१ ॥ पूव विं मु ए न नं यरु
 गं रु मं भ्रुः ॥ किं न उं यं रु दं
 रु म भरु सभु उं पू उभा ॥ ५३ ॥ क
 वं उ किं न भरु उ रु व उ किं न
 मे भरुः ॥ ५४ ॥ रु रु रु रु ॥ ५५ ॥

मैत्रेय भृगु यो ॥ ३१ ॥

ॐ ५५) ५ - ५ - ५ =

कोमिकिंयत्रभनमुषु, श्रीडिषु, निषू
भा॥ ५३॥ भक्तुय उवाच॥ ५३॥ उमु
मदि ते विपुं भनिं मभयभिउं॥ ५४॥
मभ णिभमवैमुं मभ प विव मउमः॥
५४ उउ ययय यं यय दं उन संवि
रुभा॥ ५५॥ उय विपुं कय कशिमु
राउ वैमृप विव॥ ५६॥ ग र उवाच॥ ५७॥
रुगवभुम, दं पूषु भिमु भुंकं वरुम
रुग॥ ५८॥ नः ययय नमनमभुवि
ऊय उउ विर॥ मभटुंग उउ रणुम
रुगं पि ले पु पि॥ ५९॥ ५

ॐ / से-रु-सि-उं =

सिम्पनो यय ल्लु किमेउमु निभउम॥
नयंय निभु मु रैरुगैकृटमुवे लिउः॥
मयंय निभु॥ मरणे नय भट्टु मु भुद
मीरव पुडि, एव मे पडव दं य, राव
पुटउ मुः पिउं॥ ८३॥ रुधु रै य पि वि
ये, भम डक पुभान्से, उ किमेउमुद
रुग यमे दे ल्ल निनै पि॥ ८३॥ भमामु
य रुवट्टे पु विवे क रुमु भमाम॥ ८४॥
ठ पि रुवाय॥ ८५॥ ल्लाम, भिमभमुमु
ए उ विषय गेयगे॥ ८६॥ सि = उं =

वि विषयसुभदा ए य त्रिष्वं ५ ५
 कूसक ॥ शिवः पू णिनः केशि
 इव नु मुखयोग ॥ ८२ ॥ मृत्केपि शिव
 गते पू णिन मुल्लुपूयः ॥ ८३ ॥ नि
 भरणभटं किउतनदि केवलभा ॥ ८४ ॥
 यो दि ल्लुनि भवेपमु पक्तिग
 यः ॥ ८५ ॥ ननदमनृ ॐ यउपं भगप
 कि ॐभा ॥ ८६ ॥ भनृ ॐ यउपं
 उ लुभनृउवेरुवेः ॥ ८७ ॥ नि मदि
 य मृत्तयग शिवमाकुपुः ॥ ४० ॥

क० मेका मु० मे दादी सुभाननपिकु
 ण। भगवभगवण्णु म, ठिल धामु
 उचुडि। ५०॥ लेठुडुपकगयनने
 उकिंनपमुमि, उखापिभभगवतु मे
 दगुते विपडिडः॥ १३॥ भदभाय
 पूठवेन संभागमुडिकडि ७, उत्रुड
 विभयकदे येगनिम् एगदो॥ ५६॥
 भगभायदगेमुपाडय संभेदो
 एगडा। लुपिनभपि यंमिरेवी
 उगवरीदिभ॥ ५८॥ वलामुठुपुमेद
 यभदभायपुयमुडि॥ उयविभुएण

ॐ सं ॐ = रि = ^{ममनवमगति}

भामाकउय रि ॥ ऐद्री
गेंमभाकैद मुने गकमहि

के॥ पुर उके नद मवी, रु

दं ॥ उके नद मवी॥ पञ्चानं वि
^{वधे कुत मम}

पञ्चानं न के मङ्गी उय,

गणपति मद लक्ष्मी, विष्णु

भवतः भित्ति॥ एनं एनं मुगीरु

के भगी कटक भुय॥ गकदी

न उय मुने वस्ति कवम न उ

कर्मभेदादुक्तं मे ददौ सुभक्तनृपि
 ण। भक्तभक्तवृत्तं म, ठिल धाम्
 उक्तं ॥ ५०॥ लोकादुक्तं कथयन्ते
 उक्तिं नृपमुक्ति, उक्तं भक्तवृत्ते मे
 ददौ विपदिताः ॥ ५१॥ भक्तभक्त
 भूतवत्संभक्तमुक्तिं कथितं, उक्तं
 विभक्तकथे योगिन् एव ददौ ॥ ५२॥
 भक्तभक्तवृत्तं भूतवत्संभक्त
 एव ददौ। लोकादुक्तं भूतवत्संभक्त
 उक्तवृत्तिदिशः ॥ ५३॥ वल्लभं भूतवत्संभक्त
 यमदभक्तभूतमुक्तिं ॥ उक्तं विभक्तवृत्तं

६० / ६० - ७० २ = - =

मधुनपकुरंभालं मिश्रुम परं ॥१३॥

नरुललुलठि मुसु पकुरंम ॥३॥ मे

रुनभा ॥ दिभवव दने भिं दं ग्गनिवि

विण निम ॥११॥ रुवमुटंभय पन

पडंणक ॥१५॥ मेधमुभवनगे मे भ

क म ॥ विकु पिडा ॥ ३॥ नगद

रं रुलेडुमु ठडयः ५ विवी भिभाभा ॥

मट्टे ५ भौ रुवी कुपल्लव ठडव ॥ ३०

मभ्र निडन क रुमु भ्र सु द सं भद्र

दुः ॥ उमु न रुन प्ये ॥ लुडुभा ५ वि

उं नरुः ॥ ३१ ॥

१३/३३. हि

इवंगकं रे वी, एयरी

थथ न मिनी ॥ गक मे भव

गाइ ॥, कते कत य द

मि ॥ ॥ थ म मे कं न ग प्रे प्र

य मी मु मु रु भ, भन ॥ ॥ क

व मे न क उ रे भि टं, य इ य इ दि

ग मु ॥ ॥ उ इ उ उ ल छ मु ॥

वि श यः स च क भि कः ॥

३०/ २०५ - २२ -

लौं भायवैवै धरु ॥ २२

रुमरु यै कवयय दुर्भा

विमु नैरुययवै धरु ॥

२२ लौं रुमरु यै विमु

मरुयय धरु ॥ २२ नमः मि

२२ लौं नमरु कल नै ॥

लौं नमै कभ नै ॥ २२ नमै

रुमरु कल ॥ २२ नमै कभ

कल ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वामनासाय ॥ विं नमो भगवते ॥
ये नमो भगवते ॥ पूज्य भगवतः ॥ सु
दुःखमुत्पन्नं भगवत्पदं नमस्कृत्य
देवादिभ्यो नमः ॥ पूज्यं भगवत्पदं कुरु
दत्त ॥ विं नमः ॥ एतन्नि ॥ वि
॥ यदुक्तं भगवत्पदं पुनः ययति
यत्पुनः कुमुदीभिः ॥ सद्भि
भगवत्पदं कुरु भगवत्पदं भगवत्पदं
भगवत्पदं कुरु भगवत्पदं ॥

रि व भ भु भु पि उ द न क भ न र
 द उ भ पं कै र कं, नी ल म्भु द्धि
 भ भु थ र र म कं भे व भ द क
 लि क भ ॥ रि म्भु भु भु ग्गु ग्गु
 ऊ लि मं थ म्भु ग्गु : ऊ लि कं ॥ रं
 म कि भ भिं म्भु म्भु ल रं य
 भु ग्गु र्भु ॥ मु लं थ म्भु म्भु
 च र्भु ग्गु द्धि भु भु ल भु ॥ भे व भे
 रि क्क भ भिं नी भि द भ द्धि भु भु
 भु भु ॥

वि ५४० मुल दल निमल भुमले ॥
 रं ७० भयकं, दमुक्तेरुणी यत्र
 विलसतीति मु उ लृष्टमा ॥ गेमी ८
 द भभसुवं दिग्गडभण्डुं भद ॥
 प्रवभुइमाभुडीभरुह रं भुभुहि रं ८
 द्वितीया ॥ अथ नायइय ॥ तीलइय यवि
 सुदे उरुणायणी भदि उत्रः मक्तिः पूये
 रु यडा ॥ ३॥ अथ भुलं ॥ रि द्वी लंती य
 भु ० वै विमु ॥ ००३॥ प्रववदु ७ यभः
 दधुहि ० का ० अरु ० ऊदडा ॥ गुह्य
 उद्यमभा ॥

$$\frac{S_4}{S_3} = \frac{1}{2} = \frac{1}{2}$$

मधुपयकं मालं मिश्रं पौ ॥ १३ ॥
 मरुतल्लिभुमं पकं मालि मे
 रुतम ॥ दिभवत्तु दनं सिंदं ग्निवि
 विण्णिम ॥ १४ ॥ मरुवमुटं मय्य पन
 पडंणक ॥ १५ ॥ मेधमुभवत्तु मे म
 दम ॥ विकु पिडम ॥ १६ ॥ नगद
 रं मरुत्तु पडयः पू विवी भिमम ॥
 मरुत्तु मरुत्तु वी कुपल्लव पडय ॥ १७ ॥
 मरुत्तु विडयत्तु मरुत्तु मरुत्तु मरुत्तु
 दुः ॥ १८ ॥ नरुत्तु पडयत्तु मरुत्तु पडय
 ॥ १९ ॥

$$\frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{8}$$
[illegible]

मरुण्वडंमबुभमधैगुगुवडः॥^{६३१}
 मरुम बडं रेवी वृपुले कइयं दिथ॥^{६३२}
 थरु कट्टनडकु वं किगी टं लिपि
 उभुगभा॥ के ठिडा मेय पडा लं प
 उरु निभुनेनम॥ ३३॥ मि मेरु रम
 द मे ॥ मभउगु पृ सं भिउभा॥ ३३:५
 ववडयुं उय रेवृ भगदि धभा॥^(३७)
 मभुभुं उरु उभुकेर, मी पड मिगउ
 गभा॥ मदिध भुभेननी मिक्क, छे.
 मभदभा॥ ८०॥ =

27/ ५, ४, ३-

ययणस्य भगवतः सुखं वल नितः॥

गवामयउधुदिकमगृष्टिभद

भग॥ ट॥ अययुडयुड नममदमे

ममदा क ३॥ पद्मसिद्धिस्तुति यत्

गमिलेन भद्रभाः ॥ ८१ ॥ अथ दानं

सिद्धि मित्र धुले ययण ॥ १॥

एवमिह भवत्येवमुक्तं कैः यमि
व किः

क. गिः ॥ ८ ॥ ३ ॥ क. गिः ॥ ८ ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

८३ / २ - ४ - ९३ ८ =

यययभंयगंरुग्व नं पगिवगिः॥
मटेमडर, यउमोग्वनगदयैवडाः॥
यययभंयगंरुग्व, भडरुभडभगः॥
कैरि कैरि ^{मू}मूद भूभुग्व नं रुत्रिनं उव॥
दयानंयवुडैयमुडरु रुम दिपभुः॥
उभगै रिडि पलैमुमकिठिमुभलैभुव॥
यययभंयगंरुग्वपडू यैग्वपडिभै॥
कैमिमु मि किपः मऊः कैमिदमंभुव
पगे॥ ८३॥ रुवीयडू पुदगैमुडरुंरुं
भुमरुभः॥ मपि रुवीउडमुनि मभू ८
भू लिमडि क॥ ८५॥

लीलयैवशीर्षि ^{रि} मुं निरुणमभु भुवधि
 श्री॥ मनायभुनन र्वी, भुयभन
 भा धिठिः॥५०॥ भुभेसाभा र्वेध,
 मभु हभु ^{रि} ममी॥ भे पि रुम्वे
 उभटे, र्वे वृवा दन के ममी॥५०॥ रि
 यसागभा भैटे धुवन धेव द्वागमनः॥
 निमाभ भु र्वेयं सु यवृभाना लुपि
 के॥५१॥ उणवभट्टभुभुडा गलुःम
 उ मदभूमः॥ यययभुपा सु ठिठिठि
 थला मि य धुमैः ५३॥ रि = जं॥

६७ / २ - ३ - ७ - ८ - ९ - १० - ११ - १२ - १३ - १४ - १५ - १६ - १७ - १८ - १९ - २० - २१ - २२ - २३ - २४ - २५ - २६ - २७ - २८ - २९ - ३० - ३१ - ३२ - ३३ - ३४ - ३५ - ३६ - ३७ - ३८ - ३९ - ४० - ४१ - ४२ - ४३ - ४४ - ४५ - ४६ - ४७ - ४८ - ४९ - ५० - ५१ - ५२ - ५३ - ५४ - ५५ - ५६ - ५७ - ५८ - ५९ - ६० - ६१ - ६२ - ६३ - ६४ - ६५ - ६६ - ६७ - ६८ - ६९ - ७० - ७१ - ७२ - ७३ - ७४ - ७५ - ७६ - ७७ - ७८ - ७९ - ८० - ८१ - ८२ - ८३ - ८४ - ८५ - ८६ - ८७ - ८८ - ८९ - ९० - ९१ - ९२ - ९३ - ९४ - ९५ - ९६ - ९७ - ९८ - ९९ - १००

विप्रे विर निपडिन गम्य कृष्टमेग ॥ ४३ ॥
वेभसुके सिद्धिणि, भुभलेन वमं दडः ॥
के नि निपडि कु भे डि ड मु लेन व
क मि ॥ निगुगः मगे यन दड वी
इ ॥ रिगे ॥ ५ ॥ मैलानु क रि ॥
इ ॥ मभव प्रि मगयः ॥ के थं ॥ ५ ॥
सिद्धादव भिन्न, भिन्न गीवा भुषप ॥
मिगं मि पेडा टे ध भटे भटे विण रिः ॥
वि भिन्न एण्ड भूपा पेड रुं भद भू ॥
॥ क व ड सि मा ॥ के मि कृष्ट वि ण
कडः ॥

५० / मे - भू - ७० दि -

मिन्न पिण्डे मिगमि, पडिः पत्रु
मिः॥ ७॥ कवन्नायवयवैव,
मदीः पगमयुः॥ नर उमुप
उरुयुः कुदलयः॥ क
वन्ना मिन्नमिगमः, पगमकुपि
पा० यः॥ डिपु डिपु डिपु यवु,
रुवीमैमदमः॥ ८॥ पाडि
उगवनागमै, भुगुवमवुग॥
मगभुमाठइ, यरुकुमद॥
२०॥ ७५॥



١٠ - رقی - ۲۰ - ۲۱

[illegible]

[illegible]

विष्णुः पदं कुलं नमः ॥ ३ कुलं नमः
 एते न, तीर्तं नमः नमः ॥ ०० ॥ एते नमः
 कवी नमः विष्णुः पदं ॥ नमः
 नमः कुलं नमः ॥ ०० ॥ वि
 मे वि नमः नमः, नमः नमः, वि
 नमः ॥ नमः वि नमः, पदं
 नमः विष्णुः ॥ ०१ ॥ नमः नमः
 पदं, नमः नमः विः ॥ नमः
 नमः कुलं, नमः नमः, वि नमः ॥ ०२ ॥
 उतः नमः नमः, नमः नमः विः ॥
 नमः नमः नमः उतः नमः नमः ॥ ०३ ॥
 नमः नमः उतः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः, नमः नमः ॥ ०४ ॥

(49)

ਬੰ. ਭੁ. ੮੩, ਬੰ.

ॐ वेङ्कटेश्वर, त्रिपटय ध्यायेत् ॥ ८०८ ॥
 का प्रदो ॥ मित्रमभाष्टु निष्ठ सदा ॥
 उग्रगुण ॥ त्रैलोक्यमिल वक्तुमिच्छति ॥
 यत्तु भूतलैर्नैव कलामु त्रिपटु ॥ ८०९ ॥
 त्रैलोक्यगण ॥ अङ्गुल्यभाभयमुत्तम ॥
 वक्त्रं चिन्तयेत्, तत्रैव भूतलवक्त्रम् ॥ ८१० ॥
 उग्रभूतगर्वीदं, उग्रवयस भक्तजनम् ॥
 दिनेदं दिमुल्लेख्य पापममुम् ॥ ८११ ॥
 विमलभूतिन काय, दृष्टयभाभवेति ॥
 नमः नमः चैव, मित्रं प्रियं यमकयम् ॥ ८१२ ॥

१३ / ५. ५०. (३) ३०.

स्वंभक्षीयमन्त्रे उभयैर्भदि यथाः॥

भदि यथा भुजयेत्, इत्यमरमन्त्रे नृणां॥

कश्चि उक्तं पूजयेत्, प्राक्कैयं मुखयथा॥

लङ्गुलं निःसृज्य द्वाभ्यां हस्तविमर्शना॥

वे वृणोत कंश्चिन्मन्त्रं, न ह्यन्यत् नमः॥

त्रिः शुभः भवति नष्टं दयामभ्युदये॥

त्रिपाटु प्रमथनीकं, भट्ट एवमन्त्रं भुजः॥

भित्तं दत्तं भद्रं सृष्टुः, कैयं चक्रे उदं भुजः॥

मैयि याम्बदवीदः, प्राक्कैयं मदीयं लः॥

मन्त्रं भवति नमः, चिक्के यथा नमः॥

वेगहन विष्णु भद्रोऽमु विनीदः॥ ८५
 लानु लेन दः सुविः ^५वयमभभवः॥
 यः मुन विहित सुयं ^५वयं वयः॥
 सुभजिलभुः मः ^५निये उरुमे लः॥
 उडिरे भमभद्र भद्रं भद्र भग्न॥ ८६
 मुकुं भद्र भद्र क के पं उमु य उरु कः॥
 भद्रिपुः उमु वैय मं उरु भद्र भग्न॥
 उरु भद्रिपुं पं मं य व भद्र भग्न॥ ८७
 उः भिं दे वरु दे वाव उमु भिक भिः॥
 भिन्न उरु वरु यः य न य भिन्न भिन्न॥ ८८

१८ २. ५. ३. ३.

उवाच सुपुत्रं रवीं प्रकुरु भव कैः॥
 उपमृष्टं मभं च उः मे कुमदा गणः॥
 को मभद भिदं, उं च कथ रगल्लम॥
 कथ उमुकां रवीं, पन्नेन निगक उउ॥ ३९॥
 उं भद भो कुये, म छिपं वपु, म्रितः॥
 उ वैवक्केठ यमाम, ईले हं भव रगल्ल॥
 उः कुरु रगम उ म भि कथ न भुउमम॥
 पथे पुनः पुन मुइ सुव ए द भ क म ले म॥
 नन रुय भाः मे इय, वलवीद म रं मुउः॥
 विध मं हं म मि क्केय, म भि कं प्र उकु
 ण न॥ ३५॥

ममता विदितं मुने ललयती मने
 के॥ उवाच संभवे मुने भाय गग ^{३३}
 कलकभा॥ ३५॥ मी मे वृवाच॥ ३७॥
 गल गलकं भूः भय ववदिव
 धूम॥ यद्विदितं शैव गलिष्टुष्टु
 मेवः॥ ३३॥ दधिक वाम॥ ३७॥
 स्वभक्त्या यमदृष्टं भूः संभक्त भूमि॥
 धा मे नरूष्टक मे सु ले नैनमड कुयड॥
 उडः मे पि य नरूष्ट भुया निरुभाय
 उडः॥ मरुति पुत्रावडि, सु वृ वीदे ॥
 मंच उडः॥ ४०॥

४११

सं. सु. ३ - ३ -

मठ निष्कृतावर्गभे, यष्टमने भद्रभाः॥
उद्यमभद्रमिन रेवृ, मिः मिष्ठ विप
डिडः॥ ८१॥ डे द द द सं, रेवृ
मैवृनन मिडभा॥ पूददं पगं रम,
भक ल रेवृग ७॥ ८३॥ उधुव
मुं भा रे वी, मठ रेवृमदविठिः॥
ए गुतद्ववपडये, नरे सु, पूगे ग ७॥
(८८॥ मि ड डि मी भद्रु रेवृ यथा न भा
व लि कं मत्रुगे रे वी भाद्रु महा
मनुय ए भा न सु क मः॥ ३०

ॐ कालकृष्णं कर्णकृष्णं विजयलक्ष्म्य
 मं ॐ लिलवसु मंगलं ॥ मंगलं मंगलं कृष्ण
 ॐ ॥ दिमिपमपि कर्णकृष्णं द्वा द्वी दिनेदं ॥
 मिंदभुक्तं पि दुम्हं दिद्ववतम, यिलंत
 एम ॥ यिंती ॥ एवेदुत्तं एयायुं
 दिम मयि कर्णं मेवुं मिद्वि कर्मे ॥
 ॐ नमः श्री ॐ कर्णकृष्णं ॥ टपिक
 व ॥ ॐ ॥ ॐ कर्णकृष्णः भाग ॥ निद
 उडिवदं ॥ उभिद्वगु निभुगि, वल्ल
 म ॥ ॐ उडिवः पू ॥ ॐ निभुगि ॐ ॥
 ॐ ॥

५९ / २ - ५ - (८) - ३ =

व मि पूर्य पुलकै नूनम सतः ॥ १ ॥
रेवु ययउमि सं रगगु मसु ॥ नि
मेव रेवग मसु ममद भु ॥ उमभि
कमपिल रेवमद धि पुं ॥ ठ नन
म विरु उउ मुठ निमन ॥ ३ ॥ यमु
पुठवमउ लं रुगर्वन तु ॥ वृद्ध दगु
न दि वकु म लं व लं य ॥ म स भि क
५ पिल रगगु धि पालन य ॥ न मय
मुठ ठ लमुम डिं कौ ॥ ८ ॥ यमी
मयं मुठ डिं नं ऊवने पु ल सु ॥ यथा
इतं नृउ ठियं द मये भव विः ॥ ३ =

५९ / २. ३. ५. — ६. — ७.

सुमुभं कल एत प्रवृत्त ल सुं ॥
उं डं नः म यति पालय मे वि विमुभा ॥
किं वल यम उव कुपम, मि वृम ड ड ॥
किं य वि वी दम, मा कृ य क वि कु वि ॥
किं य द वे ध य गि ड नि ड व, कु ड वि ॥
म वे ध मे वृभा मे व ग ल, मि के ध ॥
के उ म म सु ए गं दि पु ल पि मे वै ॥
इ सु य मे द वि द ग, मि वि र, पु धा ॥
म व मू य वि ल मि सं ए ग मे, मु कु ड ॥
म, वृ वृ ड दि ध म प्र वृ ति मु म, वृ ॥

५७ / सं . कु - - इ - - हि - - ॥

यष्टमममुभगु मम रं रं न॥ ८ प्रिं पू
य डि मक लेषु मयि पु रं वि॥ भू द
मि वै पिदुग ॥ भूम उ प्रिं उ॥ ९ सुद
मे द भुं एव रं नै भू म॥ ३॥ यम कि
के रं, विमिदु भू द बू उ द भू द क मे भुं
यं उ भ्रिय उ द भू गैः॥ मे क भ्रि उ भुं नि
ठि ग भुं म भुं रं वै॥ विदु मि म ठा ग वी
यम कि रं वि॥ ७॥ न वू भ्रि क भुं वि
भल लु रं यं नि ठ न॥ भू मी य ग भुं य रं
५० वं रं म भू म॥ रं वी रि यी रं
यं री ठ व ठ व न य॥ वं रं मि भव रं गं
यम भ्रि उ द भू

भणमि रं वि वि मि ड पिल सा भु भाग ॥
 मुन भिरु न ठ व भ ग न व भ भू ॥ श्री
 कै ट ठ डि ह र यै क कू ड पि व भ ॥
 गे गी ह भे व भ मि भे लि कू ड पू डि धु ॥ ०० ॥
 उ ध ड् ड भ भ भ लं थ डि पुल म भू ॥ वि
 भू उ क डि क न कै उ भ क डि क उ भ ॥
 म्भ ड् डु डं पू ह ड भ उ न ध ड् ड पि ॥ वं
 वि ले क भ भ भ भ भि य भू ॥ ०१ ॥
 म्भू पि रं वि कू पि डं रू कू र्णी क ग ल ॥
 भू हू म्भू म्भू म्भू म्भू वि य व भ हू ॥
 पू उ भ भे म्भ भि हू म्भू र्णी व भि डं ॥
 कै र्णी व डे डि कू पि ड उ क र्णी न ॥ ०३ ॥

ॐ विष्णुस्य नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मयि केवली कृष्ण ॥ विष्णु उवाच ॥
 यत्रैव नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वनः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वि न न भूत दगीम, वी डिम, मेय ए त्रु ॥ भुमु
 भूत भ डिम वी व मुठं म म मि ॥ म डि मू नः
 य रु य द रि ॥ क ड मू टः ॥ भवे प का का
 य म य मू मि त्रु ॥ ०१ ॥ प ठि द डै म्म
 म ये ट भुं प डै व डै ॥ ऊ व तु न भ न ग का य मि
 य थ थ म ॥ भ मू म भ द्म भि ग म्म वि वं पू या
 तु ॥ भ द्म डि त्रु न भ डि ट वि वि डिं मि म वि ॥ ०३
 मू पू व किं न रु व डी पू को डि रु म्म ॥ भ वा
 उ मा न रि थु य द्म डि म्म वि म म्म म ॥ लै क
 थु या तु गि थु वे पि डि म म्म पु टा ॥ उं म म्म
 व डि उ थु डि उ थु म्म पुी ॥ ०७ डि — ३०

पद्मपूठपूक विभूतै मुखै गै॥ मुल
 गक वि विव ^{द्वै} न नु मे भग उभा॥ यत्र
 गड विलय भं मु भु मि अ प भु॥ ये गानं
 उव विले क यं उं उं उं॥ १०॥ न व उ उ उ
 मभनं उ व न वि मी ले॥ उ पं उ उं उं वि मि
 उ म उ लु म टैः॥ वी दं स द नु उ उं उ व प
 ग कू म उं॥ वै वि यु पि पू क वि उं उ व स य
 द ये उ भा॥ १०॥ के नै प म क व उ उं उ प
 क म भु॥ उ पं स म इ क य क द वि द वि
 क इ॥ अ उ क य म भा वि यु गं स नु पू॥
 द ये व न वि व ग न क व न उ ये पि॥ ११॥-

५७

३ - ५० - ८५ - ३

रिडैलै कृमंडरु, पिलं विधुनमनेन॥ इडंडु
 यमभगभुचनितोपि दंड॥ नीडु रिवं विधुग
 लठयम, धृपामु॥ भ, भ, कभमरु भग वि रु
 वं नमसु॥ ७३॥ मुल्लेन थ दिने रु वि पदि
 पमै नय भिके॥ अरु भुने ननः थ दि स
 पट्ट निः भुने नय॥ ७४॥ धूमं ग क पूरी टं
 य स भि के र कु रु मि ले॥ इम ले न म
 मुल भुमै उ गं उ वे सु रि॥ ७५॥ मे भु नि
 य नि कु प रि डै लै के विमरु तिते॥ य
 नि सट्ट न थै ग रि डै ग रु भं भु य ऊ व म॥ ७६॥

५/ ५-५-५३ ५-५-५-५

विपद्मुलगरुमीनियनिमभु विपद्भिके॥

कथल्लवभन्नी विपद्भुक्तभवतः॥११॥

विपद्भिकवाम॥१३॥ सर्वभुक्तभुक्तिवैः

कृमभैत्रुनैः॥१५॥ विपद्भुक्तभुक्तिवैः

गङ्गावलेयनैः॥१७॥ कृमभैत्रुनैः

विपद्भुक्तिवैः॥१९॥ विपद्भुक्तिवैः

सुभाषी भभभुक्तभुक्तिवैः॥२१॥ मीम्वु

वाम॥२३॥ विपद्भुक्तिवैः

विपद्भुक्तिवैः॥२५॥ विपद्भुक्तिवैः॥२७॥

कृमभैत्रुनैः॥२९॥ विपद्भुक्तिवैः॥३१॥

वाम॥३३॥ विपद्भुक्तिवैः॥३५॥

विपद्भुक्तिवैः॥३७॥ विपद्भुक्तिवैः॥३९॥

सिं सं भूट सं भूट इने दिं भी यः॥ परम परः
 वसुभट्टवैरें कि मुं मुं पृष्टमला नन॥ ३५॥
 उष्ट्र विउ विउ विवि रु वै रन म्ग मि मय
 रभा॥ वृक्ष ये भद्र मन डं रु वे क भवम्
 धिके॥ ३७॥ द पि रु व म॥ ३८॥ उ डि प्र
 म रि ट रे वै ल ग डे ऊँ उ ख झ नः॥ उ ख डू का
 रु म् क ली व कु व त दि टा नृ प॥ ३९ उ ह
 उ क्वि डं कु प म भू टा म य ख पु ग॥ रे वी
 रे व म गी रे ऊँ ए ग द्वि य जि डे पि नी॥ ४०॥
 ध न सु गे री रे दा ड्ढ म भू टा वं ख ठ व ड॥ (६८)
 व ण्य रु धू रे टा नं उ ख म भू नि म भू येः॥
 उ क्त उ य सु ले क नं रे क न भ य क वि नी॥
 उ क्त उ य भ य पु उ य व व ड्ड य मि डे॥ (६९)

मुठ्ठा 1

१३ श्री गुरु गुरु न गुरु नि गुरु न श्री गुरु न
सुखी न सुखी न सुखी न सुखी न

5. $\vec{a}, \vec{b}, \vec{c}$ —

[illegible]

मुठ्ठा १

५० / सं . ५ . ५० — रि —

रि ठीय मगिइष्ट, ५ इ ट पिः भग्भुती

रै वर भग्भुती कः ठीम मक्तिः

इमगी वी रग्भा भुदभुं सभव र्भुति

भयी ठीय मगिउथ विनिर्वेगः ॥ रि

५०० मुलदल नि मरु भमले चं उः

भयकं ॥ दभु वैरुण्ठी यनउ विलभभुती

उं मुउल्लुपुठभा ॥ गी गी रि दभु भुव दि

रग्भा भुण्ठुं भद ॥ भवभु भग्भुती

भरु र्भु रि रैटा द्वितीभा ॥ रि नमः

गी यभु क र्गवट्ट ॥ ट पि न व म ॥ ० ॥

रि यग्भु निभु ह्म भु हं मयी पडे ॥

पैरु
भग

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८७ ॥

नमः पूज्यै नमः विष्णवेः पूज्यैः भगवते ॥

गोप्यै नमो विष्णवे गोप्यै नमो नमः ॥

हृदयै नमः श्रुतयै नमः भगवते नमः ॥ ८८ ॥

कलत्रैः पूज्यै नमः भगवते नमः ॥

नैऋत्यै नमः लक्ष्म्यै नमः भगवते नमः ॥ ८९ ॥

विष्णवे नमः श्रुतयै नमः भगवते नमः ॥

पुण्ड्रयै नमः भगवते नमः ॥ ९० ॥

मणिभूयै नमः भगवते नमः ॥

नमो भगवते श्रुतयै नमः भगवते नमः ॥ ९१ ॥

सि यस्वीभवकुडधुविष्णुयडिमविः॥

नममुमु^(७८), नममुमु^(७९), नममुमु^(८०), नम नमः॥

सि यस्वीभवकुडधुसुनटकिपीयड॥

सिनममुमु^(८१), नमः ०३, नम, ०७॥

सि यस्वी. वद्विउयेनमं भिः॥ नममुमु^(८२),

९१, नमः, ९०, नमः, ९९, नम नमः॥

सि यस्वी. निमुउयेन, नममुमु^(८३), ९३॥

नम, ९८, नम, ९५, नम नमः॥

सि यस्वी. सुठउयेन, ९७॥ नममुमु^(८४),

नमः ९३, नम, ९७, नम नमः॥ सि

९३ / ३. ३. ५० - ३ - ३

यस्वी. कयकुपेय. नममुष्टे. ३.

नमै नमः ॥ ३८ ॥ - नममुष्टे. नममु. नममु. ३०-३९-३३

यस्वी. मकिकुपेय. ३५. ॥ नममुष्टे. ३

नममुष्टे. ३३. नममुष्टे. ३३ ॥ नमै नमः ॥ ३९ ॥

यस्वी. कयकुपेय. ३. नममुष्टे. ८.

यस्वी. मकिकुपेय. ८०. नममुष्टे. ३.

यस्वी. मकिकुपेय. ८१. नममुष्टे. ३॥ ८९, ८३, ८८ ॥

नमै नमः ॥ ८९ ॥ यस्वी. लमकुपेय. ८०-८१-८३

नममुष्टे. ५९. नम. १०-११- नमै नमः ॥

५३ / ३ - ३ - ७२ - ३ -

यस्वी. म. त्रिकुपे. नमसु. ३३

५३, ५४, ५५)

यस्वी. म. त्रिकुपे. नमसु. ३३

यस्वी. क. त्रि. ५६, ५७, ५८

५९, ६०, ६१)

यस्वी. लक्ष्मी. ६२, ६३, ६४

यस्वी. व. त्रिकुपे. ६५, ६६, ६७ -

यस्वी. म. त्रि. ६८, ६९, ७० -

यस्वी. म. य. ७१, ७२, ७३ -

यस्वी. उ. त्रि. ७४, ७५, ७६

यस्वी. भ. त्रि. नमसु. =

यस्वी. इ. त्रि. ७७, ७८, ७९)

~~$$\frac{52}{5} \div \frac{3}{4} = \frac{52}{5} \times \frac{4}{3} = \frac{208}{15}$$~~

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥

(सिद्धियुक्तं वा नृपतिसूत्रं प्रकृतम्॥

नमसु ३०, नममसु ३१, नमसु ३३।

ॐ नमः
ॐ भूतभैः प्रवर्तुषु मे भूय ॥ इत्युक्तं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कौण्डिनः मुकु

ਫਤਹੀ ਸੁਗੀ॥ ਸੁਠਾਠਿਕੁ ਠਾਠਿਕੁ ਤੁ

॥३॥ वासाभूतं मे कुतः स्मृ

ॐ पिउं॥ गम्भा किरी मा हि भूगैत्रभृउ॥

याम् भुङ्क्ते मेव दत्तः ॥ भव ५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

— ५८ — ५८ — ५८ — ५८ —

(६८ धिक् व ५॥ ६८)

एवंभुवहि यक्तं नं, ए व नं उ उ थ व गी ॥ ६८५

अउम, हृ य यो उ य र द्र वृ ८५ न २१ ॥

भ वृ वी ड मृ म हृ कृ व हिः भू य उ इ क ॥

मृ गी कें म उ मृ भूः म भृ कृ ड वृ वी भि व ॥ ६८६

मृ थ व जी भृ कृ ग मृ ड नि न ड मि व न भ म म व
थ व जी भृ जी व र ड ॥

५८ उ उ म भै उ इ य उ म भृ मृ ड नि ग कृ डैः ॥ ६८७

मृ वैः म भृ मृः म भृ नि भृ मृ न थ मृ इ डैः ॥

म गी कें म द व ड, निः मृ ड य उ मृ भि क ॥

य उ मृः नि मृ ड भि क ॥ ६८८

कें मि की ड म भृ मृ थ उ उ ले कें प गी य उ ॥

54 / च. सु. ५० — रि —

उष्टं विनिःभुतं यंतु कृष्णं कुक्षं पि पक्वी ॥ ७२ ॥

कलिकीटिभभाष्टाटिभिः मलकृतं मुखं

उष्टं भुक्तं पांतु पंक्तिं ॐ भभने दग्धा ॥

मम जय ॐ भभ सुकृष्टं भभ निभुभये ॥ ७३ ॥

उष्टं भभ यथाष्टाटि भरीवभभन दग्धा ॥

कपृष्टं भुभिमदग्धा, ठभयत्री दिभभ ॥ ७४ ॥

नैवदग्धा सिद्धं पं मपुं केन मिमुदभभा ॥

स्त्रयंतं कपृष्टं देवीगदग्धा भो मा ॥ ७५ ॥

श्रीगदभदिभवद्गी कृष्टयत्री मिमभुप ॥

भभुदिभुदि कृष्टं कृष्टं कृष्टं कृष्टं कृष्टं कृष्टं

— रि — (७८) — रि —

५५ सं. ३. (५५) — दि —

३३
विद्य निगद निमल्ये गरुड मसी निवै धुठि॥
इलेके उमभ पु निम ^{मुद्र} ~~मुद्र~~ विडि ॥ ९१ ॥
मेगवः भम नीडे गरुड पाठगड ॥
कागरुड मयं डवै वें मुः भूव द यः ॥ ९२ ॥
विमानं दं भमं चर्क मेड डि धु डि ड मु ने ॥
गडुड भिद नीडं य म सी दु प मे मु भा ॥ ९३ ॥
निणिवम द य म्मः भम नीडे उने मुगड ॥
किरू किनी र मे र विडु ल म भू न य
क र भा ॥ ९४ ॥ क रं डे व र म गे द क अ
भू वि डि धु डि ॥ उ व यं मु र न व र यः पु र मी
दू र य डं ॥ ९५ ॥

12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महेश्वर, इति मन्त्रमसि विष्णुसूक्तम् ॥

५ मः अलिलार एभृकुतुसुव ५ निगुका॥

निमिषं विरुडासुमभुगङ्गायः॥

वदितुं, पितृ त्रिभुवन, विमलं स्रवणमसि॥

एवं मृदुगुत्र निमग्नमुत्तरा दृष्टा निते ॥ १०५

श्रीगङ्गाय नमः कलाम्, इयम् कम्पनगुह्यम्

॥ छिटा विक्रम ॥ ०.३ ॥

॥ छंटा (धनुर्वार) ॥
निमभृ (उवयः) मभुः भडरुय भुय ॥

पूषयभयभग्रीवंमुं देवृभदभाः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०५ ॥

यवगन्धुडिमं पूडावाका दंड्य लपु॥

५५ / २ - ३ - ४ - ५ - ६

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥
भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥ ॥ ॥

॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥
भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

भद्रगङ्गाय नमः ॥ भद्रगङ्गाय नमः ॥

॥

कीर्तिमयनेमुंडद्वारांभासाः॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

यत्रिमृद्विभुवपुगनुवपुगधुम॥ २००३)

गङ्गा नदिकुल निरा निमष्टेव मेरुने॥

भूगङ्गां तं वि लो क म ह व य म ॥

मादुमभानुपगम्यते इति वयम् ॥

ॐ कर्मभक्तवत्सलविभक्तुमरुविक्रमभा॥

कलहंशमूलपत्रिगुणमिव यः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(007)

57-2. ३५ - (५५) — ३३ —

सि उदकमामरं वीगभीगुतः भिदुष्टं
मतामगवरीरुमययं पदं रगड (१०३)

सिमी रं वृवम ॥ १००० ॥

महभुंरुयनरु भिष्ट किद्रुदयेरुमा ॥

इलेरुपिपडिः भंभु निभुमसु पिद्रुमः ॥ १००१ ॥

किद्रु किद्रुयद्रुडि रूडं भिष्टुडि यरु कवमा ॥

मृयामल्यवमिद्रुडि रूय कृपुम ॥ १०१० ॥

येमं रावडि भुमयेमं रुद्रुये कडि ॥

येमं पुडिवले ले केमं रुद्रु रुविपुडि ॥ १०११ ॥

उरु मृगमुडुभुमिद्रु निभुमिद्रु भद्रुमाः ॥

मं रिद्रु किं मिद्रु उरु य मिं गद्रुडुम ॥ १०१२ ॥
लये ॥

53 / मे. कु. ५७ — ६ —

हं स्वमेउमुली भर्मे निभर्मे मुडिवीद
वना॥ किंको भि पुडिमुमय म न लेमि
रुपुग॥ ०५०॥ मडंग मुम यै वैकुंठ य
मे उडुवमडुमिडः॥ उ म म कू मरु
य म म युकं को उयडा॥ ०५०॥ — कि
उडि^{५७} मी मे वी भज डु मु उ म व डु मे नम
यै डु मे पृ वः सं पल्लभ (ममापुभा =
रुमभा॥ भक्कु डु पुग ले म वल्लिके म
नडा ० भवमडु ल मडु ली कु रु मभा॥
हि मि द मु म मि वे पग भग कड पु पु म
उ डि डु लैः॥ मं मु मं कु ठै मं मु रु ठी
न इ डि डिः मे डि ऊ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

१ - ५ - ६ -

ममताम न दा कङ्क ॥ १ ॥ डू डू की

॥ ३ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

ایشیامیں پاؤں پھیلائے کے لئے روس مصبوں

ایران کی طرح چنوریا میں بھی اتنے کہ نہ

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

59 / सं. ३ - ८५, — डि —

मिउदिगिरुः कसिमुदिवेडिपुउयः॥
मद उवैभोवपि यत्तेगववापवका॥ ५॥
मिउपिउवका॥ ५॥ डि

उना लु पुमुः मी थं मरुट्टे पुमु लेमनः॥
कः धपु मदमु ममां मुं यय॥
मदपुं उं उं रं वी उदिन मल मं मुदिमा॥
एगा रं मुः पूया कीडि मुलं मुदिनिमुयं॥
नयं दूट्टे वरी मरुडा मुयं मुदि॥ उं व
लात्रय मेध के म कध विड लभा॥ ७॥
मीर वृवका॥ ७॥ रं रं मुं थूदिउं तलकाव
लसेकाः॥ तलात्रयभिभ मेवं उं मुकिं
को वृदभा॥ ७॥

7. / सं. ५ - - ५० - - ५० - - ५०

सिंहधिरु वसति ०१॥ ^{किं}मिहि न वडु भर्मा
प्रभलेमनः॥ ^{उद्धृ}उद्धृते ^{५०५}कं रुभमस
काग धिकउः॥ ०३॥ अवरुमुं भद स
टंभभगं उरु धिक॥ यवधनय के श्री
॥ ^{५०६}मुव मकि पौ मुठैः॥ ०४॥ उं यउभ
रः केयहृद नं भर्मावर्मा॥ यपाट
भामे नयं सिध रूवृः भुव द नः॥ ^{५०७}नी
कं सिद्धु पुद नं ^{५०८}मै टन भन स पग॥
अरुट्ट रण उट्टा दुप न भमद भर्मा॥
केयं सिद्धा य भम नयैः केयु नि के भगी॥
उव उल पुदः ^{५०९}नं सिं भिद्धव दू स का॥
(०१)

७० / २० - ५ - ३ - ३

विष्णुवत्तु मिगमः कृतमुनः स्वयं ॥
यथा कृतं कथं कृतं यथा के माः ॥
कृतं नः सुलं भवं कथं सीतं भद्रं ॥
उत्तरे मणिं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥
मृदुलं सुगंधं कृतं कृतं कृतं ॥
वलं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥
कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥
कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥
कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥
कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥

८७० — ५५ — ५५ — ५५ — ५५ —

कै मे पुरुष व सु व य म् व मं मयै वृत्ति ॥
५५ मे य वृत्तिः सर्वैः पुरैः विनि दृष्टं भा ॥
उभं दृष्टं वं सु यं मि दं विनि य
डि ॥ मी भूमि गृहं व सु गृहीतं
भक्त भिक्त भा ॥ १ ॥ ५५ श्री भक्त
व पुराण भा वलि के भक्त रं वृत्ति
मं भुक्त भा ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
पी ॥ सु क क ल य ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
ला ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥
म क ल ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

इकायीक टिलकुष्टलनटलक भूगोल

कली का लवर न विनिष्कृत भिष विनी

विशिष्टाष्टकं नमो भगवते श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्री श्री स्वामीजी एतत् सुखं भक्तिं वा

॥ ३ विभुगवम् न सिद्ध ललन की यत् ॥

निमिषकुनयन नमः प्रसिद्धि युक्त ॥ ३॥

आवेगे न छिय गिरा पाउवती भद भुग॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अभिगुणकुमरादिये ० प्य भूमि

॥ भवद्वयैकदभुनभुयसिद्धेयवा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वक्रमनैशुवयतु ॥ १० ॥

॥ कं एण्ड के मे षु गी व य म य म भु म ॥
 प रे न रु भु म व रु म मे ट पे द य ज ॥ ०९ ॥
 उ म रु नि म म भु मि म द भु मि उ य भु ग ॥
 भा पे न एण्ड क प रु म ने भु वि ट ट पि ॥ ०३ ॥
 व लि नं उ रु लं भ वे भ भ गं उ रु ग रु म ॥
 भ म रु रु क य म रु ट न टं मु ट रु व रु म ॥ ०८ ॥
 अ भि न नि द टः के मि डे मि ड् रु रु म ट डि टः ॥
 एण्ड मि न म भ भ ग रु रु ग रु चि द ट भु व ॥ ०५ ॥
 क रु न उ रु लं भ व भ भ गं नि प डि ट म ॥ ०६ ॥
 रु भु य रु चि रु रु व टं क ली म डि टी य उ म ॥
 म व रु म रु टी मं टी म की टं म ॥ क रु
 य म म रु रु म रु रु चि यु म रु म रु म ॥ ०७ ॥

१३ / २०५ : ८१ — १००

इति स्म कृत्वा नेष्टु न कति विमल न निद्रु
पभा॥ वक्र दक्षक विभु निमवद्रु निधने
रुग्भा॥ ०३॥ उँ ए द भ डि क धा की मं रै
व न मिनी॥ कली क ग ल व क्क उ पु रु म
व म्ने सु लः॥ ०७॥ उक्ता य स भ द मि
दं रु वी स क भ ण व ॥ १॥ की द्वा य पु के मं प
मिग्ने न मि न मि न ॥ १०॥ अ य म भुँ छि
रु म् व तं रु प्पु य भुँ नि य डि ड म ॥ उ म्पु य ३
य मु म्पे य द्वा छि द तं रु य ॥ १०॥ द म्पे य
उ ३ः म्पे य रु प्पु य भुँ नि य डि ड म ॥ म भुँ
य म्पे य वी दं मि मे रै रु य ३ ॥

(११)

[illegible]

१८ / ३ - ३० - ३१ - ३२ - ३३ - ३४ - ३५ - ३६ - ३७ - ३८ - ३९ - ४० - ४१ - ४२ - ४३ - ४४ - ४५ - ४६ - ४७ - ४८ - ४९ - ५० - ५१ - ५२ - ५३ - ५४ - ५५ - ५६ - ५७ - ५८ - ५९ - ६० - ६१ - ६२ - ६३ - ६४ - ६५ - ६६ - ६७ - ६८ - ६९ - ७० - ७१ - ७२ - ७३ - ७४ - ७५ - ७६ - ७७ - ७८ - ७९ - ८० - ८१ - ८२ - ८३ - ८४ - ८५ - ८६ - ८७ - ८८ - ८९ - ९० - ९१ - ९२ - ९३ - ९४ - ९५ - ९६ - ९७ - ९८ - ९९ - १००

पिनगणीमुविभूतं कलि कलि तुं भूतु
वली ॥ कभूदलं विरुका विरु नरइय
मुभिरा ॥ मल कुभुक पालनी एकं
मभूतं लिपं ॥ भव सुमुठिवा कनि
लयं पभूवती मित्रये ॥ विनमसी मभू
क रगवट्ट ॥ टपिकवम ॥ ० ॥ विमभूयं वि
मभूतं मभू विविपति ॥ वदुले भूत
भैरे भूत विरे भूत भूत ॥ १ ॥ उः के प पा
पीन मभूतः मभूतः भूत पवना ॥ ३ ॥ हे गे भवसे
तनं रै ट न म भि र म भ ॥ ३ ॥ मभू भव
वलेः रै टः भूत सी डि रु म भूतः ॥ कभूतं
मभूत सी डि विदुत भूत वले दः ॥ ४ ॥ वि

किंकि कीद लिपि स म भा उं कुल नि
म म मां कुल नि प्रभु उं निम सुत म भा सुय ॥
क ल क म ह म भे वृ क ल क य पु व प ॥
भा य मु य म सु नि द उ उ गि उं उ म भा सु य ॥
उ ट लु पृ भा य डि मु भे क व म भ नः ॥ नि
ल ग म भ द म र म भ द म र द क चि वः ॥ १ ॥
मु य उं म डि क म भु उं म र म डि छी य म भा ॥
हृ भ नः पु य म भ नः ग ग न उ म ॥ ३ ॥
उं सिं दे भ द न र म डी व ह उ व न प ॥ ४ ॥
अ हृ भ नः उ व मं म डि क म वं द य ॥
उ हृ भिं द अ हृ नं न म पु डि मि म य ॥
नि न रं डी य मः क ली रि हृ वि मु गि नः ॥ ५ ॥

ॐ ३ विनामपमूटमैटैमूउरिमभा॥
 ॐ वी भिं द भुव क ली री गे धैः प रि व रि तः॥
 ॐ ३ भि नु गे तु य वि न म य भ र्ति भा॥ ठ व य
 भा म र्त्त ना भ (३) वी द व ल वि तः॥ ०३॥ ॐ
 वृ ह्णे प गु ल वि भु न्ता उ व मू र्मु म क उ यः॥
 म गी र्हे वि नि पू र्मु र्मु पै मू (३) कं य यः॥
 य मू र्मे व भु य मू र्प य व कु य ॥ व द न भा॥
 उ मू र्मे व वि उ मू र्ति भा ग र्ते मु न य वः॥
 दं स य र्मु वि भा न भू म र्त्त भू उ क म र्मु लः॥
 भु य र्ता वृ ह्णः म र्ति वृ ह्ण ली म र्ति पी
 वः॥ ०५॥ म दी मु गी व प कु र्मु रि मु ल व
 ॐ ३ ली॥ म द वि व ल य पू पु य र्मु र्गा य
 वि कु य ॥ ०७॥

ओं मे वी म गी र तु वि नि धु त उ णि य ७ ॥
 य धि क म ङ्गि र द्ग र मि व म ड नि न शि ली ॥
 म म द य म र टि ल भी म न म, य ङ्गि र ॥
 उ ड ङ्ग म्भु र ग व द्द म्भु नि म्भु य ॥
 कृ दि म्भु नि म्भु य म्भु र व व णि ग वि डे ॥
 ये म्भु र व म्भु र य म्भु य म्भु र ॥ ११ ॥
 रै लै कृ मि म्भु ल र डं मे व म्भु द वि कृ ॥
 यु यं पु य ड पा ड लं मि म्भु रि री वि ड मि
 म्भु ॥ १२ ॥ व ल व ले प म्भु ये म्भु र ॥
 य म्भु क ङ्गि ७ ॥ उ म्भु म्भु उ र पु तु म
 मि वः पि मि डे न वः ॥ १३ ॥ - ३ - ॥

योनिवर्तुते नय मे वृमिवः सुयभा
 मिवमृगीडिले केभिं भुग्मृष्टा डिमृगः ॥
 ३५ मृष्टवर्मे मृष्टः मिवष्टां भद भुगः ॥
 सुमद्व ५ रिग मृष्टदरकट्ट यनीमृष्ट ॥
 ३६ः पूवमभेवगे मगमक्रिष्टियष्टि (३ः)
 ववद्वरुमृष्टमद्व भुं मे वी मभगवयः ॥
 ममद्व द्य डिडव ७ मृष्टमरुं पाद्वयव ॥
 मिष्टु मृली लयावृ ३ एनमृष्टमृष्टी मृ
 डिः ३० ॥ मृष्टमृष्टः कली मृष्टपाद्वि
 मृष्टिगरी ॥ पद्वरु पे यिं मृष्टी कवरी
 विमृष्ट ॥ ३१ ॥ कभमृ लल लकेपद्व
 वीद्वरु मृष्ट ॥ वृष्ट मृष्टी मृष्टी मृष्ट
 वृष्ट वृष्ट मृष्ट ॥ वृष्ट वृष्ट मृष्ट ॥ ३३ ॥

हि मच्च मुनी रिमु ले नडवमरु वैकुंठी ॥
 मेटादू पान के भागी डव मुकु रि के
 पिडा ॥ ३८ ॥ मेन्नी कुलिम पाने न मा
 मे मेटा नवः ॥ येउ चिम रिडाः ५५
 रु रि पय प्रवध ॥ ३५ ॥ उरु प्रवध
 विपुमु मं प्रु म् कड वरु मः ॥ वरु द
 भुट्टा पड मुकु ॥ म विरु रिडाः ॥ ३९ ॥
 नपै विरु रिडां मुट्टा मुक्त यत्री भद
 भुगवा ॥ नग भिं दी मगा रैन म
 अ रिड रिमु न ॥ रि पुल्ल रिगुग ॥

८३ लिमेन दडधु सुवद भभुवसे लिउमा॥ भभु
उभुभुउयेण भुभुपभुदग रुभा॥ ८३॥ यवतः ५३
उभुभु मगीर मूक विरुवः॥ उवतः पुरुष रण्डा
भुभुद वल विरुभः॥ ८४॥ उभु पिययपभुदपु
धो क विरुवः॥ भभेभाउ विरुदगं मभु पाडा वि
रु पभाभा॥ ८५॥ भनभुवसु पभु नरुभभुमि
येयस॥ ववदगउं पुरुषभुउं रण्डाः भदभुमः॥
वैधुवीभभो येनंरुके उचि र प नद॥ गरुय
उरुयभभ येमीभभो मभुभा॥ ८६॥ वैधुवीरु
चि त्रभुग पिभुव भभुवै॥ भदभुमे रगवृपुं
उभुभु मभुभुः॥ ८७॥ मभु र प न के भगीव
रुकीमउय भिभ॥ मकी मगी रिभुव नगु रीरं
भदभुभा॥ ८८॥

३३ ३ - ३ - ३ - ३

हि भायेन कली रणदे गुरुवी रणभूमि लिङ्गम् ॥
उद्भावरूप नवगम या उद्भावि कम् ॥ ५७ ॥
नर्मभूवेन नमस्ते गम या उद्भावि कम् ॥ उद्भावि
रुद्रतु वदु मभूवमे लिङ्गम् ॥ ५८ ॥ यद्भावि रुद्र
यद्भावि मभूवम् ॥ ५९ ॥ भाये मभूवम् यद्भावि
उद्भावि मभूवम् ॥ ६० ॥ उद्भावि मभूवम् यद्भावि
उद्भावि मभूवम् ॥ ६१ ॥ रुद्रतु वदु मभूवमे लिङ्गम्
मिहि रुद्रतु वदु मभूवमे लिङ्गम् ॥ ६२ ॥ रुद्रतु वदु
भीति मभूवम् ॥ मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम्
दत्तः ॥ ६३ ॥ नीरुद्रतु मभूवम् मभूवम् मभूवम्
मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम् ॥ ६४ ॥ दत्तः उद्भावि
मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम् ॥ ६५ ॥ उद्भावि मभूवम्
यद्भावि मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम् मभूवम्

उ३: पा सु द भुं सु भा य तुं रै ट पु न्न व भा ॥
 सु द ट रै वी त उं पौ पा उ या उ ड ले ॥०॥
 उ मि त्रि प टि उ कु र्मे त्रि मु र्मु णी म वि कु र्मे ॥
 इ उ द डी व म कू कू: पू य ये द तु म, धि क र्मा ॥
 भा व भु भु य द मु न्दी उ पा म य उ: ॥
 कु र्मे, पु चि उ ले वृ पृ म धं न र्मे य ये ॥
 उ म य तुं म म ले क रै वी म क्क भ व मु य ड ॥
 इ म वुं र, पि ण व सु क ग डी व रु म द र्मा ॥
 उ ग य भा म क कू रै त्रि र, य ५० म नै न म ॥
 म म भु रै ट मै ट नं उ र व ण वि ण वि न ॥

७१० सं. ३. (७) — ३ —

तिष्ठति भिन्ने भद्रा नरैः भृष्टैः ठमद्रा भृष्टैः ॥

प्रायः भाग्यगानं गंतव्यं विमेषम् ॥ १० ॥

उः कलीभद्रा गगनक्रमादुत्पद्यते ॥ ११ ॥

का हंति त्रिभुवनं प्रकृतां भुवि विदुः ॥

यद् यद् दममिव भवदुःखं यद् यद् ॥ १२ ॥

तैः सर्वैः भाग्यभुक्तेः केषां ययौ ॥ १३ ॥

मृगं भिन्ने भुवि भुवि दृष्टं दृष्टं विदुः ॥ १४ ॥

उत्पद्यते दृष्टं दिवं वैराग्यं कसमभुवि ॥

मभुनगादयं मज्जिभुक्तेः लक्ष्मीय ॥

भुयातीव विदुः लक्ष्मीय भुभुक्तेः लक्ष्मीय ॥ १५ ॥

भिं दन रं न भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥
 निरुद्धनिः भवे ध्ये गे रिण्डभुनवनी पत्र ॥ ११ ॥
 भभभृक दुगन्तुवी भभभृदु दिडा दुगन्तु ॥
 भिभृदु भुभिरुगुः मः मेव स द भुनः ॥ १२ ॥
 उः म य भि क रं दु मु ले न हि र प न भा ॥
 मः र हि द रं दु मे भु छि रं नि प प उ द ॥ १३ ॥
 उं नि भु भुः भभृ पृ म्पे न भडु क म्प कः ॥
 मु र प न मग्ने वी क ली की भ रि नं उ य ॥
 भन भृवृवृ वृ न भयं रं न रं सुग ॥
 म्प य उ न रि डि रः मु र य म म म ॥
 * भि क म्प ॥

ॐ रुगवरी ॐ रुगवरी नमिनी ॥
 मि ॐ रुगवरी नमिनी ॥
 ॐ निभुम्बे वगेन गरुभरु यम ॐ रुगवरी ॥
 मरुणववै दतुं ॐ रुगवरी मरुणववै ॥ ३३ ॥
 उभृपाडा वसुगमं मि ॐ रुगवरी ॥
 पद्मे ॐ रुगवरी ॥ मरुमुले मरुणववै ॥
 कुल दमुं मरुणववै निभुम्बे मरुणववै ॥
 हृदि विवृणमुलेन वेग विवृणमुलेन ॐ रुगवरी ॥
 चित्रभृत्तमुलेन हृदय निभुम्बे पाः ॥
 मरुणववै मरुणववै कयः वीर भुम्बे ॐ रुगवरी ॥
 * वरुण ॥

3F 2-7-9-10-11-12

उभृति यू भोरे की पूछतु भनवतुः ॥
 मिमू मापन नो भ वपद मु वि ॥ ३३ ॥
 उः भिदः मुप मे गू रं यू कः मिो जगता ॥
 मुभां मुं कली मिवदुतीः य भगता ॥
 के भगी मदि नि विनः के मिने मुमद मुग ॥
 इम ली भउ पुते नडे मे न वृ भद मुगः निगद ॥
 भदे मुगी रिमुले न विनः पेउ मुष पगे ॥
 बागदी उरु पड न के मिमुली कृ उ उ वि ॥
 पडुं पडुं म म रे व पू वृ मनव द ॥
 वद्वेनी म रे श्री दमु गवि भक्ति न डका पगे ॥
 के मिदि न मुगभाः के मित्र पू भद दवात्रा ॥
 क किता मु पे कली मिवदुती भगपि पे ॥
 (१०) उदि सी भक

(१०) उडिमी भकड़ी

रि ३ बुधदभरु मिं ग विमम्वद्रि ॥ नेरं ०
 नः मायतं दुमकभय माना ॥ गृहैः कु ह
 मूमण्डी भिवम क्रिकुं ॥ कभे सुंगी हृदि
 रुम भिपुडमुले पामा ॥ रि ३ डि हृत्तमा ॥
 रि नमस्ती मिडि क ठावट ॥ ट पि रु व य ॥ ३०
 रि निभं नि दं पयु हृत्तं ॥ मभम
 भा ॥ दृष्टम नेवलं यैव मभः रुके वीरु
 य ॥ १ ॥ रु लवले पाद्यपुं हं म रु ने गव
 म वद ॥ मृष्टमं वलम मिष्ट पृष्टमे य
 रुनी ॥ ३ ॥ रि मी रे वृत्तय ॥ ४ ॥ रि ३ ॥

३५/ ३ - ४ - १०० - ३ -

मिवृट्भूणिमउमैममनेयट्थभिक॥
 वरुण्ड निमैट्भूभूडूनी भाउ कट्टि॥
 भकुनिउनयभूणिमिवृनिपामेभुगी॥
 मरुण्ड निमैट्भूवठकुली लयैवैगद
 कौमु ७ मिठि॥०३॥ उः ममउंरुवी
 मकुलयमैवाः॥ मपिड्डु पिरुवी
 ण मिमुळमयुठिः॥०४॥ मिउं ण पि
 रैट्भूभू मकिभयारु॥ मिमुळ मि
 रुवीमकुळमयुठुको मिउमा॥०५॥
 मः पणुभयारुय मउमंरु वरुभडा॥
 मरुणवउंरुवी रैट् नमठि पयुः॥०६॥

उभयपक्षे च सुपुत्रं सिद्धे रयं हि क॥
उभयपक्षेः मित्रैश्च न सुमया कं भलभा^{००१}
दत्तमुभयपक्षेः मित्रं च विभा विः॥
रुद्रदभुम्भं यै रभुम्भं विप्रे मुय वि
प्रे हृत्तः॥ ०३॥ मित्रपुत्रमुभयपक्षं विमि
त्रैः म॥ ३॥ उभयपक्षे च सुपुत्रं भुम्भं भुम्भं
यवना॥ ०७॥ भुम्भं भुम्भं भुम्भं भुम्भं
मै हृत्तः॥ ०८॥ भुम्भं भुम्भं भुम्भं भुम्भं
भुम्भं भुम्भं॥ १०॥ उभयपक्षे च सुपुत्रं भुम्भं
भुम्भं भुम्भं॥ ११॥ भुम्भं भुम्भं भुम्भं भुम्भं
भुम्भं भुम्भं॥ १२॥

उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 त्रियंभुं पितृभुं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 यद्भुः प्रथमं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 मक्तिपुं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 मक्तिपुं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥
 उद्धृष्टं भूगर्द्धं भूगर्द्धं गगनमभिद्धं ॥

कलयन्मकलं प्रसीम विहीनं समग
 रम् ॥ ११ ॥ ३३ः प्रसन्नम्, यिलं कर्तुं उभि
 मुगम् ॥ १२ ॥ एगम्, प्रसीम वामी वसति
 मलं कवचः ॥ १३ ॥ उद्युतम्, अमेक
 ये प्रगमं मुं ममं वयः ॥ सति उं म नवदि
 टु मुभिं मुद नि यति ॥ १४ ॥ उं न वय
 लु अवे कव नि मु म नमः ॥ ककु यति
 कर्तुं भिं गम् व ललि उं ए यः ॥ १५ ॥
 मुव न यं मुयै वट न उं मु भिं ग
 लुः ॥ वयः यटः मुयै वटः स यै क
 वकः ॥ ३० ॥

मृग लसुगयः मत्रः मत्र मिगुनि
 उभुनः॥ ३९॥ ५॥ श्रीमक कु य पा
 मव लि के भनत्रो रे वी भा द हुं म मने
 ५ कृयः सं थल्लभा मभापुं मुठभा मभः

हि उहृ मि न हृ नि मि हि किरी सं उरु क
 मं नयन रि य य कुभा मभाभां नी वा
 मृकु म भ मभा नी ३ कं पूरु रे ठवी
 नी मीभा॥ ५॥ ३॥ हृ नभा॥ हि नमः य हि क
 ठगवी टै॥ ८॥ पि न व यः॥ ०॥ हि रे वृ दंडे
 मृ भद भु मे मे मृः पूर व क्रि यो गभा
 धभा॥ कृ यनी उधू व रि पू ल ठ, हि क

[illegible]

७०. सि - मे रि - ००० - डि -

रि कलकपूरुडि उय^{००}यति उमविण यिनि॥ विमृष्टपा
रे मऊ रि नग यलि नमै मुड॥ ७॥ रि भवमकुलम
कुल विवेभवकुसठिके॥ मा ह् रूभके रि नग य^{००}
रि मृष्टि मुडि विनामानं देउकु उभनउते॥ ग^{००}मूये
गु^{००}भये रि नग य^{००}नमै मुड॥ ००॥ रि मा उगउसीनउतु यति
रू^{००}यग य^{००}॥ भवमृष्टि दरे रु वि रि नग य॥ ०३॥
रि दंभयकुविभनमु॥ वृद्ध^{००}ली उय णरि लि॥ के मभुः
मृष्टि के रु वि रि नग यलि नमै मुड॥ ०३॥ रि रिमु
ल सभूउठण भद वधरु वदि नि॥ भ द मृगीभउय^{००}
रि नग य॥ ०४॥ रि म प्राकृकुलवउ भद मकिण
नये॥ के भगी उयसं भूने रि नग य॥ ०५॥ रि गदी
उगु भद सभू रं पु सु उवभूरे॥ वगद उ पि लि भिवे
रि नग य॥ ०६॥

७० ॥ ३० ॥ (००) ॥

रिचमिंठ कुपे लम्बु न दत्तं रूट कूट वृम ॥ इलेट्टर ॥
मफिउ रि नय ॥ ०७ ॥ रि किमी रि मिमज वरू ॥
मजभूनय डेकुले ॥ व इयू न दत्तं रूट रि नय ॥
रि मिमजुडी मुकुपे न दत्तं रूट मज वले ॥ येगुपे मज
गवे रि नय ॥ ०९ ॥ रि रूपू कगल वरू न मिम
ला विकुयले ॥ रूमरू मरू मरू न रि नय ॥ ११ ॥
रि ल किमल रू मज विरू रू पयू स रू पूवे ॥ मज गदि
मज विरू रि नय ॥ १३ ॥ रि मरू मरू रि वरू
रू विममि ॥ निय डेडू रू मी रू मि रि नय ॥ १५ ॥
रि मवमुकुपे मवे मिमवम किममि ॥ रूय रू मरू रि
रू वि रि नय ॥ १७ ॥ रि रू डेडू वरू न मिम रू ले रू न
यकु पिडम ॥ पडनः मव रू रू रि नय रि मिम ॥
(१८) ॥

विष्णु ल कालमद्गुप्तमेव भगवन्महा॥ विष्णु लं
 भुवनेषीत ठमूक लि नमो भुवने १५॥ वि विनमि रं
 टोरे सं भि भुनेन प्रद व रगग ॥ साय ४० भुवने रं
 वि भये हेंतः भुवनिवा १०॥ वि भुमा भुमा भयक
 य विभुमे को रं लः ॥ मुत्तय यन्ते ठवउ य भि के
 डं नर वयमा ॥ ११॥ वि रें गान, मेधान, पं चं भि उ भू ॥
 पं क्क भि क भान्म क लान्, सी पून ॥ इभ, भिउ ने न वि
 यत्रा ॥ ॥ इभ, भिउ द्वा मयान् पूय ॥ १३॥ वि
 ६०॥ यद्गुप्तं नंदयद्गुप्तं विष्णु रं विभद मा ॥
 भा ॥ उपर, न कै व द्वा ण्डु, भुति, रं द्वा भि के रं द्वा गे डि
 क ट ॥ १०॥ वि विह भुमा भुपु विवेक स्त्री य ॥ भु ह
 भु व रं भु य क द्वा र ॥ भम द्वा गे डि भद भु क ॥ विह
 भ य भु उ र्दी वि वि भुमा ॥ ३०॥ वि = . = . उं = ॥

११ / हि - सं. हि - - हि - -

हिं म्कं भि यदेगु विध मुनग। यद्गये रुधुवला
त्रियइ॥ रुवानले मइउव विभट्टे, इइ फुइं डं यति
थ भि विमुभा॥ ३०॥ विमु सुगि डं थ भि थ भि विमुं, वि
मु भि क णग्यभी डि विमुभा॥ विमु मवमु रुवरी रु
व डि, विमु मय ये इय रु कि नभूः॥ ३३॥ रु वि भूभी
रु थ भि थ ल यने डि ठी, विं डं थ व भव रु रु पने व
भट्टः॥ थ थ निभव रुगं थूमं नय मु, रु इ ड थ
क रु निं मु भ ठे थ भ नन॥ ३४॥ थू रु नं थूभी
रु डं रु वि वि मु डि ठा डि लि॥ इ ले रु व भि रु भी हु
ले क नं व रु रु व॥ ३५॥ **हिं मी रु व रु ॥ ३६॥**
रु व रु रु रु ग रु वां य रु न भी थि रु भा॥ उं व रु पं
थू य रु भि रु ग रु भू थ क रु क रु॥ ३७॥ **हिं मी रु व रु ॥ ३८॥**
हिं भव रु रु थूमं नं इ ले रु रु थि ले मु डि॥ रु व भे व
इ य क रु द भू भू रु डि न म न भी॥ ३९॥ **हिं मी रु व रु ॥ ४०॥**

ति नैव भुङ्क्ते भुङ्क्ते विंशति यग। भुङ्क्ते भुङ्क्ते
मैव टा वदन्ते भद भुङ्क्ते ॥ ८० ॥ ननु गेप गे दे
रा य मे र ग ग न भुव ॥ उत मे न म मिष्ट मि विष्ट
म ल निव मिनी ॥ ८१ ॥ य नुष्टि र्दे र्दे म उये
५ विवीडले। भवतीद द निष्ट मि वै पूष्टि उत
र न व न ॥ ८३ ॥ ग क य ट म उ र ग र्दे पूष्टि उ
म द भुग न ॥ ग क र उ र विष्टि र्दे मिनी क
म मे प म ॥ ८८ ॥ उत मे र वः भने भट ले के
भन वः ॥ भुवन्ते टा द रिष्टि उत म उ र क र उ क म ॥
कु य म म उ व दिष्ट भुवन्ते पु म न भु मि ॥ भनि
रिः म भु र कु मे भ भु विष्टि र्दे य निष्ट ॥ ८९ ॥ रि
उः म उ न ने र उं निगी क्तिष्ट मि य म नीग ॥ की
यिष्टि उत भनः म र क्ति मि उि मे उ ॥ ९१ ॥ रि

हि उँ उमऽपिले ले कमऽमरं द भमरुवै॥ कवि
 प्र भिभगः स कैर, वऽपुः पू न ण कै॥ ८३॥ हि
 हि स कभगी डि विष्टुं उरु यष्टुष्टुं वि॥ इ इ वस
 व णिष्टु मि नमऽष्टु म द भुग्मा॥ ८४॥ नृ नरं
 वी डि विष्टुं उरु नम रु विष्टु डि॥ पुनऽष्टु दं यरु
 ठीमं उयं रुठु डि भ स ले॥ ४०॥ गंतं मि रुठु
 वि य मि भनीनं रु न का उरु॥ उरु मं भनयः स
 वे भुष्टु नमऽष्टु यः॥ ४१॥ ठीम सीवी डि विष्टु
 उं उरु नम रु विष्टु डि॥ यरु न उष्टु ले ले
 भन वरुं कविष्टु डि॥ ४२॥ उरु दं रुमं उयं
 रुठु भन य यष्टु रुमा॥ इ ल रुष्टु डि उरु य
 व णिष्टु मि भन भुग्मा॥ ४३॥ ————— हि —॥

७३ - (३०) - २०० -

हि इमं गीतिमं लोकं पुनः पुनः विभवतः ॥ हि
 उक्तं यमयमवतारं न वेत्ति न विदुः ॥ यत् ॥
 उक्तं वगीशं कं कतिपयं विभवतः ॥ यत् ॥
 हि उक्तिमीमांसां यथापि भावलिङ्गं
 ननु गीतिमीमांसां यथापि भावलिङ्गं ॥ यत् ॥
 मम लब्धं ममायुषं मुक्तं मम - हि ॥

हि यमः कुरु ममायुषं ॥

हि विदुः मम प्रकृतं भगवति भक्तिं
 यत् ॥ कटिः कवलयितुं विलसन्
 मुक्तिं मे विदुः ॥ न मुक्तं गमयिष्ये
 यत् ॥ विलसन् विमलं यत् ॥ इत्यनेन ॥
 विदुः यत् ॥ लब्धं ममिदं मुक्तं हि न
 इत् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

विधि भवः भक्त्युपेय वि क लानं यैयपहृत् ॥
 नमो कुरुलं यमं भा कुरुं भम सु ३५ उभा ॥ ०५
 मैमू वि कर्म भवत् ३ व रु सुप्र रु मने ॥
 गुरुपी रु यमैरु भम कुरुं सु ३५ माक्रम ॥ ०६
 ३५ भानः ममं य विगुरु पी रु य रु रु ॥
 रुः मयं य रु वि रु पं रु मयं रु य रु य ॥ ०७
 बालगुरु वि रु रु नं वलनं म वि कुरु कमा ॥
 भा ३ रु रु पि रु रु मैरी रु भुडभा ॥ ०८
 रु वुड रु भ, मे य रु वलन वि कुरुं पभा ॥ ०९
 रु रु रु रु पि मा रु रुं ५० रु रु व रु मने ॥ १०
 मवं भमै ३ रु रु रुं भम रु वि रु कुरु कमा ॥ ५५
 रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥ १० ॥
 वि रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥ १० ॥

श्रीतिमै क्रिये उम मिमरु ममृगिउ पूउ ॥

पूउं काडिय यनिउ वउं गं पूयमुडि ॥ ११ ॥

गळं कोडि कुउं हें एमिनां कीउने भम ॥ यदु

पुयगिं यमे मु पूरु ट निव द्द मभा ॥ १३ ॥

उमि कुउं वै गि कुउं रुयं पंमं नम यउ ॥ यधु कि

मुमुउं यमु य मुव द्द धिः रुः ॥ १८ ॥ =

वृद्ध उम रुउ यमु पूयमुनु मुळं मडिभा ॥

मग हें पूउ व पि रु व प्रिय गि व गिउः ॥ १५ ॥

मधु चि व कः मुउं गदी उ व पि सुडु चिः ॥

मिंद वृष्ण न व उ व वने व वन द मि चिः ॥

गळ रुकु नम ल्ल पु व ट व न ग उ पि व ॥

मुप्र लि उ व व उ न मिः पे उ म द ल व ॥ १२ ॥

पगु व पि ममु पु ममु म रुम रु ल ॥ भव

व ठ म ये ग मु वे रु न ह रि उ पि व ॥ १३ ॥

[illegible]

भवतिमाके॥ मुनिः॥ (११)

वि बल नून नु ल क सं स उ व द्वा रि ले न न मा ॥
 प म कु मे मां वृ पं ण य व ती मि वं ठ ले ॥ ५
 म म न भु क प क र हं ॥ गि द ले म नु णं ती रि
 ने इ मा ॥ म भु री भु ठा ७ पि गं ॥ प म व ती
 प म भा यी न म मि ॥ **वि न म सु डि क ठ ग व टै ॥**
वि ठ पि उ क म ॥ ० ॥ ए उ उ क वि उं कु प र वी भ
 क म भु उ म मा ॥ एवं भू ठ व म र वी य ये र ह उ
 र ग ड ॥ १ ॥ वि ह उ ये व क्रि य उ ठ ग व वि भू म य
 य ॥ उ य ह मे व वै मृ सु उ व वै क ट वि वि कि न ॥ ३ ॥
 मे ह ते मे दि उ म्भु व मे दं मे भु डि म प ॥ उ भु ये डि
 भ द र र क्क मं प म म सु गी मा ॥ ८ ॥ सु ग पि उ मे व
 नु ७ ठ ग म न प व न म ॥ ५ ॥ **भ क उ प उ क म ॥**
 ७ डि उ भु व मः मू ड मू ड भा वः क डि य द ठ ॥ १ ॥

अद्वैतनिर्णयं गच्छं कर्ममूलवत्तल्लता॥०१॥
मैथिलैर्मृगैर्वृक्षैर्न निविशन्मनसः॥ भवेद्वद
मिडिप्रह्लाः मन्त्रविमृष्टिकर्तृमा॥०३॥ श्री
रुक्मीयवत्॥०१॥ भूलैर्गदैरिदुपतैर्भुगैः
प्रभृतेष्वना॥१०॥ कृत्वा प्रदक्षिणं त्रिवरा
हं कविप्रति॥१०॥ भद्रमुद्रयः मधुपरा म
रेव विवभुः॥११॥ भावलिर्कैमग्नमरुवा
कुविठविप्रति॥१३॥ वैमृवैद्वय ममृवो
मृतेरिव विप्रुः॥१४॥ उंथ्यस्तुभिसंभिक्षुं
उवस्तुनं कविप्रति॥१५॥ भद्रुवत्तल्लता॥
७३ रुद्रायै रुक्मीयवत्तल्लतां वस्त्रमा॥
वस्तुवत्तुल्लतां रुद्रायै रुद्रायै मृगैः प्रियुः॥
सर्वं रुद्रायै लवु भगवः रुद्रियवत्तुः॥
अद्वैतमममम ह भावलिर्कैमग्नमरुवा॥१३॥

७३ - (५३) - ६ -

अवलिङ्गविजयः॥११॥ उडिहृत्तारि
केलनपुल्लमृग॥ उडिमीभक्तुंय
पुगल अवलिङ्गमृगुमीरुवीभक्त
हृभगवैमृवापुमनेनमइयैरुमेहयः
मभुलभा मुक्तुमुभवरागांभम
कमवरागभलभृ॥ लिङ्गुडीमंवडा
१००१॥ ममुवकिमुधुं॥ नवगडीपु
मरुपुप्रीमहृरुवडी॥ महुभवमैमय
रिबुद्धवय॥ रिरुतैगपभिमडि॥ रिडिलपदः
रिडिपद विनपुमयः कुरुडिमिवभृमः॥ भय
त्रिनाकतैयव रिनुः यउरुमिः॥ रिमयः किल
पदः कुरुन विरि॥ मुभवमंमभक्तुंमुधुंयदुः
वभगी॥ किलपदंनकुमुः कुरुडिमुडनाकंवरुड

ॐ सर्वभूतः लक्ष्मणः

ॐ सुमायु म वि वि भैरव सु रि

भट्ट उः वः ॥ सु नू वः

इति वि ह भ क ग ड भू लक्ष्मण

ॐ को भवा वः ॥ न व कृ हे म

निग भयमे ॥ वः भ न ध व गी ड

व कः ड भू लक्ष्मण ॥ १॥

ॐ सर्वभूतः लक्ष्मणः

७३ - (१५. ७३) - १३ -

भवलिङ्गविजयः॥११॥ ॐ ह्रीं नमो
केलनयल्लभ्यते॥ ॐ ह्रीं भक्त्युक्तं य
पुनः भवलिङ्गं नमस्कृत्य श्रीदेवीभक्त
हृत्पुण्यवैभवाय नमः नमो ह्येतेभ्यः
भक्त्युल्लासं मुखा मुखावराणां भक्त
कमवतामनसु॥ लिङ्गसंवा
१००॥ ममुवति मधुमे॥ नवग्रीष्म
माहृष्टी भक्तिवती॥ भक्तिवतीमय
विदुर्देवता॥ विदुर्देवतामय॥ (विदुर्देवताः)
विदुर्देवता विदुर्देवताः कुरु विदुर्देवताः॥ भक्त
विदुर्देवता यव विदुर्देवताः यव विदुर्देवताः
पदः कुरु विदुर्देवता॥ भक्तवतीमय भक्तवतीमय
व भक्ति॥ विदुर्देवता कुरु विदुर्देवता कुरु विदुर्देवता

हैं सर्व दुर्गः लक्षणः

हैं मुमायु म वि वि मं उर मु वि

भणु उः वा एण्डा ॥ मु न नु वा

उरी वि ह भ का उ भु ल मु का भा

हैं को भना वा एण्डा है न व ऊ है न

निग भयमं ॥ वगु भ न धु वगी उ

व का उ भु ल मु न भा ॥ १॥

२००० २०००

हैं सर्व दुर्गः लक्षणः

भणु उः वा एण्डा ॥ मु न नु वा

उरी वि ह भ का उ भु ल मु का भा

हैं को भना वा एण्डा है न व ऊ है न

निग भयमं ॥ वगु भ न धु वगी उ

व का उ भु ल मु न भा ॥ १॥

२००० २०००

کے لئے جو پتہ ہمارا ہے
میں نے یہ خط لکھا ہے

تمہاری روزگاریں اور
میرے روزگاریں

میں نے یہ خط لکھا ہے
میں نے یہ خط لکھا ہے

میں نے یہ خط لکھا ہے
میں نے یہ خط لکھا ہے

میں نے یہ خط لکھا ہے
میں نے یہ خط لکھا ہے

ادم

لست بگویم که من بگویم را اماره

که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد

که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد

که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد

که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد
که در این دنیا هر که باشد

ॐ सुनी सुभागा इति सुतः सुतः

भागा, पि॥ सा ना पुन पि भागा

कु का ३ मूल कृत भा (३)॥

ॐ ३ ठ व स त म् सा र न स त्ता

जे धु विवा र्णा॥ ३, ६ क

वि भागा ३ का ३ मूल कृत भा

(८)

[illegible]

اوج کس کس
سوره و سوره

حکمت لعل سوره و

نور لعل سوره و

نور لعل سوره و

نور لعل سوره و

نور لعل سوره و

نور لعل سوره و

زوم

نہی راک رک

۱۰۰ صفحہ ۱۰۰
 زیادہ تر اس کے لئے ہے کہ اس کے لئے ہے
 ۱۰۱ صفحہ ۱۰۱
 ۱۰۲ صفحہ ۱۰۲
 ۱۰۳ صفحہ ۱۰۳
 ۱۰۴ صفحہ ۱۰۴
 ۱۰۵ صفحہ ۱۰۵
 ۱۰۶ صفحہ ۱۰۶
 ۱۰۷ صفحہ ۱۰۷
 ۱۰۸ صفحہ ۱۰۸
 ۱۰۹ صفحہ ۱۰۹
 ۱۱۰ صفحہ ۱۱۰
 ۱۱۱ صفحہ ۱۱۱
 ۱۱۲ صفحہ ۱۱۲
 ۱۱۳ صفحہ ۱۱۳
 ۱۱۴ صفحہ ۱۱۴
 ۱۱۵ صفحہ ۱۱۵
 ۱۱۶ صفحہ ۱۱۶
 ۱۱۷ صفحہ ۱۱۷
 ۱۱۸ صفحہ ۱۱۸
 ۱۱۹ صفحہ ۱۱۹
 ۱۲۰ صفحہ ۱۲۰
 ۱۲۱ صفحہ ۱۲۱
 ۱۲۲ صفحہ ۱۲۲
 ۱۲۳ صفحہ ۱۲۳
 ۱۲۴ صفحہ ۱۲۴
 ۱۲۵ صفحہ ۱۲۵
 ۱۲۶ صفحہ ۱۲۶
 ۱۲۷ صفحہ ۱۲۷
 ۱۲۸ صفحہ ۱۲۸
 ۱۲۹ صفحہ ۱۲۹
 ۱۳۰ صفحہ ۱۳۰
 ۱۳۱ صفحہ ۱۳۱
 ۱۳۲ صفحہ ۱۳۲
 ۱۳۳ صفحہ ۱۳۳
 ۱۳۴ صفحہ ۱۳۴
 ۱۳۵ صفحہ ۱۳۵
 ۱۳۶ صفحہ ۱۳۶
 ۱۳۷ صفحہ ۱۳۷
 ۱۳۸ صفحہ ۱۳۸
 ۱۳۹ صفحہ ۱۳۹
 ۱۴۰ صفحہ ۱۴۰
 ۱۴۱ صفحہ ۱۴۱
 ۱۴۲ صفحہ ۱۴۲
 ۱۴۳ صفحہ ۱۴۳
 ۱۴۴ صفحہ ۱۴۴
 ۱۴۵ صفحہ ۱۴۵
 ۱۴۶ صفحہ ۱۴۶
 ۱۴۷ صفحہ ۱۴۷
 ۱۴۸ صفحہ ۱۴۸
 ۱۴۹ صفحہ ۱۴۹
 ۱۵۰ صفحہ ۱۵۰
 ۱۵۱ صفحہ ۱۵۱
 ۱۵۲ صفحہ ۱۵۲
 ۱۵۳ صفحہ ۱۵۳
 ۱۵۴ صفحہ ۱۵۴
 ۱۵۵ صفحہ ۱۵۵
 ۱۵۶ صفحہ ۱۵۶
 ۱۵۷ صفحہ ۱۵۷
 ۱۵۸ صفحہ ۱۵۸
 ۱۵۹ صفحہ ۱۵۹
 ۱۶۰ صفحہ ۱۶۰
 ۱۶۱ صفحہ ۱۶۱
 ۱۶۲ صفحہ ۱۶۲
 ۱۶۳ صفحہ ۱۶۳
 ۱۶۴ صفحہ ۱۶۴
 ۱۶۵ صفحہ ۱۶۵
 ۱۶۶ صفحہ ۱۶۶
 ۱۶۷ صفحہ ۱۶۷
 ۱۶۸ صفحہ ۱۶۸
 ۱۶۹ صفحہ ۱۶۹
 ۱۷۰ صفحہ ۱۷۰
 ۱۷۱ صفحہ ۱۷۱
 ۱۷۲ صفحہ ۱۷۲
 ۱۷۳ صفحہ ۱۷۳
 ۱۷۴ صفحہ ۱۷۴
 ۱۷۵ صفحہ ۱۷۵
 ۱۷۶ صفحہ ۱۷۶
 ۱۷۷ صفحہ ۱۷۷
 ۱۷۸ صفحہ ۱۷۸
 ۱۷۹ صفحہ ۱۷۹
 ۱۸۰ صفحہ ۱۸۰
 ۱۸۱ صفحہ ۱۸۱
 ۱۸۲ صفحہ ۱۸۲
 ۱۸۳ صفحہ ۱۸۳
 ۱۸۴ صفحہ ۱۸۴
 ۱۸۵ صفحہ ۱۸۵
 ۱۸۶ صفحہ ۱۸۶
 ۱۸۷ صفحہ ۱۸۷
 ۱۸۸ صفحہ ۱۸۸
 ۱۸۹ صفحہ ۱۸۹
 ۱۹۰ صفحہ ۱۹۰
 ۱۹۱ صفحہ ۱۹۱
 ۱۹۲ صفحہ ۱۹۲
 ۱۹۳ صفحہ ۱۹۳
 ۱۹۴ صفحہ ۱۹۴
 ۱۹۵ صفحہ ۱۹۵
 ۱۹۶ صفحہ ۱۹۶
 ۱۹۷ صفحہ ۱۹۷
 ۱۹۸ صفحہ ۱۹۸
 ۱۹۹ صفحہ ۱۹۹
 ۲۰۰ صفحہ ۲۰۰

लिठिलयइ

मि

लिठिलयइ विनु पशु यः कुरुति

मृगः॥ मया डि नर के सुगं वा क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री लिंग या वि

मूर्धन्य कुरु मरुतु वे मुयुयं य

मेगी॥ लिठिलयइ नर के सुगं वा क

मिड ना के सुगुड॥

یہ صفحہ ۹
زیادہ تر اس کے لئے ہے اور نہیں ہے یا ان کے لئے ہے
میں نے خود کو اور قتلوں کے سبب سے بے پروا وقت میں
ایک نڈی سے یا میں تمام کوٹ ۱۱
۲۱ کندوں میں اور کھڑے ہوئی ۱۱
و یاد رہے کہ یہ سب کو لایا ہے ۱۱
کے لئے ایک یا بے پروا ہوئی ۱۱
جسے جسکا رہی دلو کا ہوئی ۱۱
کیونکہ یہ کوئی اور کس زدن نہیں ۱۱
لہذا یہ سب لایا اور یہی ہے
سب کو لایا ہے خود کو بے پروا کی ہے
جس کے لئے یہ ہے کہ یہ ۱۱

